VASUNDHARA COLLEGE OF ARTS, SCIENCE & COMMERCE, GHATNANDUR

NAAC Accredited 'B' Grade, With CGPA 2.47.

Affiliated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad

Dr. Arun Dalve
(M.A., B.Ed., Ph.D.)
Principal

Mob:9424342148
Mob:9822898727
Mob. 9923019540
Website: www.vasundharacollege.org
E-mail - principalvcg@rediffmail.Com

Ghatnandur, T.q. Ambajogai, Dist. Beed, Pin – 431519 (Maharashtra) E-mail- vasundharacollege2000@gmail.com

Outward No.VCG /20 - 20/ Date -/ /20

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during for the year 2020-2021.

Index

Sl.no	Name of teacher	Title of book	Title of chapter	ISBN number	Page No.
1.	Dr Gajanan Sawane	Sahitya Sadhana - Dr Devidas Ingle Gaurav Granth	Ek Bhasha Hua Karti Hain Main Chitrit Samajik Chetna	978-93-91913-00-7	3 to 6
2.	Dr Pandurang Ranmal	Recent Perspectives In Sports And Psychology	Factors Affecting Sports Performance	978-81-9473-49-4-9	7 to 12
3.	Dr Arjun More	Covid-19 Pandemic And Its Impact On Socio Economics Development In India	Bhartiya Krushi Vyavasthewar (Covid-19) Corona Virus Cha Parinam: Ek Abhyas	2349-638x	13 to 17
4.	Dr Arjun More	The History Of Pandemic Like Covid-19 And Its Impact On Socio Economics And Political Sectors In The World	Role Of Communication Skill In Higher Education	2278-9308	18 to 23
5.	Assi.Prof.. Makarand Jogdand	Theories Of International Politics	Realism And Security Challenges From Its Neighbour	978-93-89657-82-1	24 to 31

6.	Assi.Prof.. Makarand Jogdand	Global And Internal Politics: Issues And Areas	Kendra Va Ghatak Rajya Yanchyatil Prashaskiya Aani Aarthik Sambandh	2229-5224	32 to 40
7.	Prin. Dr. Arun Dalve	The History Of Pandemic Like Covid-19 And Its Impact On Socio Economics And Political Sectors In The World	Mahamari Aur Covid-19 Ka Itihas	2278-9308	41 to 48
8. `	Dr. Amol Gangane	The History Of Pandemic Like Covid-19 And Its Impact On Socio Economics And Political Sectors In The World	Mahamari Aur Covid-19 Ka Itihas	2278-9308	41 to 48

PRINCIPAL
Principal
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

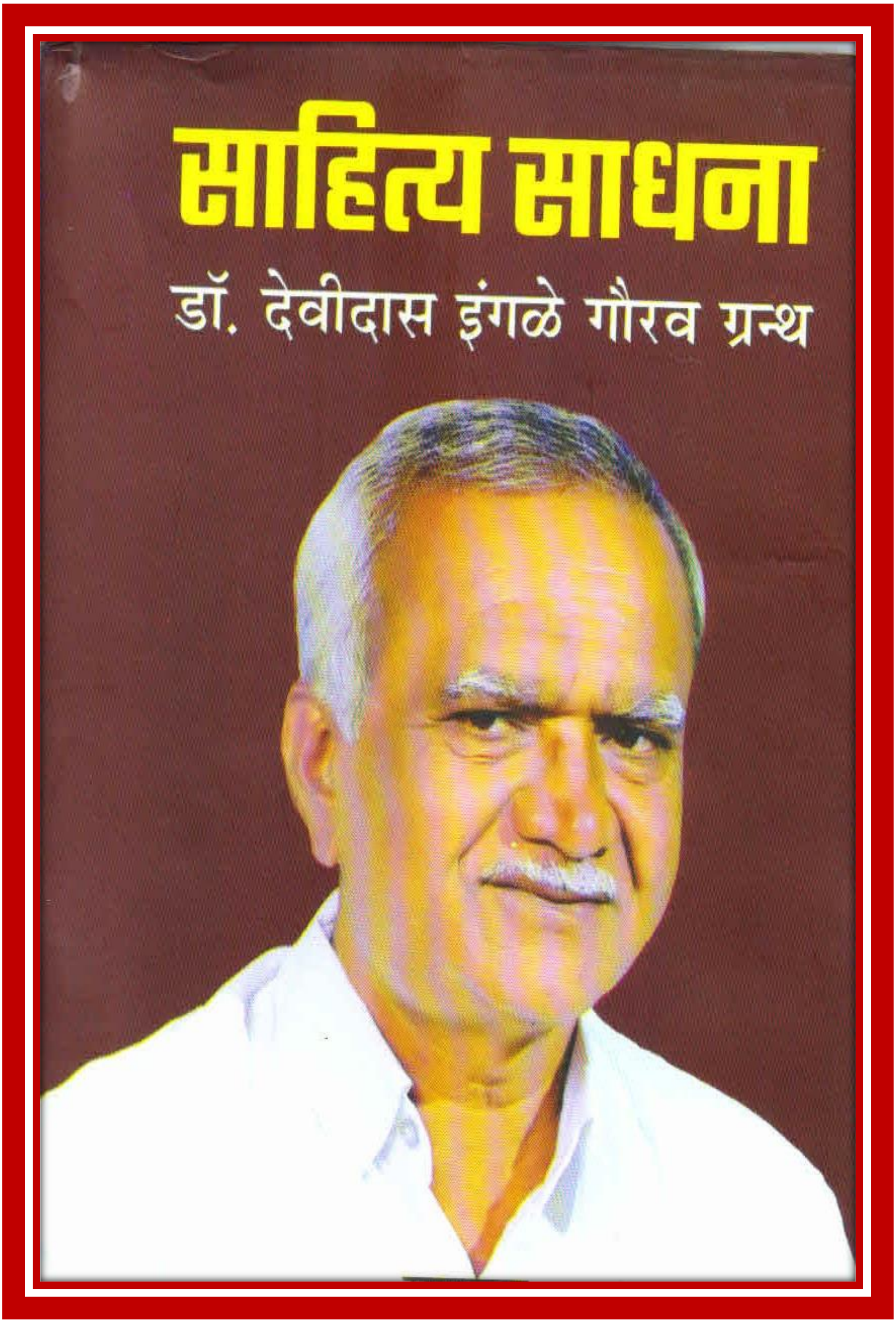
साहित्य साधना
डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं । सम्पादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचार प्रसारित नहीं किया जा सकता ।

पुस्तक	: साहित्य साधना (डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ)
सम्पादक	: डॉ. अशोक वसंतराव मर्डे डॉ विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'
आई.एस.बी.एन.	: 978-93-91913-00-7
संस्करण	: प्रथम, सन् 2021
©	: सम्पादक
मूल्य	: ₹ 795.00 मात्र
प्रकाशक	: अमन प्रकाशन 104-ए /80 सी, रामबाग, कानपुर-208 012 (उ.प्र.) मो. : 09839218516, 9044344050 फोन : 0512-3590496 (ऑफिस)
शब्द सज्जा	: अमन ग्राफिक्स, रामबाग, कानपुर
मुद्रक	: आर.बी.ऑफसेट प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

SAHITYA SADHNA (Dr. Devidas Engley Gourav Granth)

Edited by : **Dr. Ashok Vasantraw Marde, Dr. Vinodkumar Vaychal**

Price : Rs. Seven Hundred Ninty Five Only

संपादकीय ......

आदरणीय गुरूवर्य तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के हिंदी अध्ययन मंडल के अध्यक्ष प्रो. डॉ. देवीदास इंगळे जी के अवकाश ग्रहण के उपलक्ष्य में साहित्य साधना यह गौरव ग्रंथ पाठकों को सुपुर्द करते हुए हम अतीव आनंद का अनुभव कर रहे है।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के हिंदी अध्ययन मंडल के अध्यक्ष प्रो. डॉ. देवीदास इंगळे जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से आप सभी परिचित हैं। महाराष्ट्र की बड़ी शिक्षण संस्थाओं में स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था का नाम लिया जाता है और उसी शिक्षण संस्था के रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय उस्मानाबाद से वे 36 वर्षों की लम्बीसेवा के पश्चात् हिंदी विभाग प्रमुख इस पद से अवकाश ग्रहण कर रहे है। प्रो. डॉ. इंगळे जी हिंदी भाषा एवं साहित्य के गहन अध्येता एवं अध्यापक के रूप में सुप्रसिध्द हैं। शिवाजी विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर परीक्षा में सर्व प्रथम आने पर उन्हें डॉ. चंदुलाल दुबे सुवर्ण पदक प्राप्त हुआ था। उन्होंने 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकः पात्र प्रधानता की विशिष्ठता' इस विषय पर विद्यावाचस्पति की उपाधि अर्जित की है।

वे विगत 36 वर्षों से हिंदी भाषा तथा साहित्य के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसंधान एवं प्रचार–प्रसार के कार्य में पूर्ण निष्ठा के साथ जुटे हुए है। अपने कार्य काल में सर के 11 छात्रों ने विद्या वाचस्पति की उपाधि प्राप्त की तथा 5 छात्रों ने विद्यानिष्णात की उपाधि प्राप्त की है। आपने अब तक 17 पुस्तकों का लेखन एवं संपादन का कार्य सफलता पूर्वक किया है। इसी प्रकार आप के अब तक सौ से भी अधिक शोधालेख प्रथितयश पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आज सैकडों छात्र–छात्राएँ अध्यापन तथा महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में कार्यरत हैं। आपने बहिस्थ परीक्षक के रूपमें–मुम्बई, पुणे, कोल्हापुर, सोलापुर, नांदेड़, नाशिक एवं हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड़ आदि विश्वविद्यालयों के लघु एवं बृहत शोध–प्रबंधों का मूल्यांकन किया है।

स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था के महाविद्यालय अनेक शहरों में होने के कारण आपका तबादला शुरूआती दिनों में होता रहा। जहाँ भी आपने नौकरी की, हर जगह आप सम्मान के हकदार बनें। पिछले अनेक वर्षों से आप मराठवाडा में ही कार्यरत रहे हैं। तुलजापुर हो या उस्मानाबाद के महाविद्यालयों में वे छात्रप्रिय प्राध्यापक रहे हैं। आपने अपने जीवन के अत्यधिक वर्ष उस्मानाबाद में बिताये हैं। उस्मानाबाद के रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय में कार्यरत रहते हिंदी अध्ययन मंडल के एक बार सदस्य तो दूसरी बार अध्यक्ष के रूप में चुनाव जीते। इसके पहले आपने मुंबई

43 'एक भाषा हुआ करती है' में चित्रित सामाजिक चेतना 223–225
डॉ. गजानन सवने
44 हिन्दी दलित नाटकों में प्रतिबिम्बित सामाजिक क्रान्ति 226–229
डॉ. अनघा तोड़करी
45 हिन्दी साहित्य : महिला साहित्यकार 230–233
डॉ. छाया कड़ेकर
46 हिन्दी दलित साहित्य की पृष्ठभूमि : डॉ. बाबासाहेब आंबेड़कर की राजनीतिक विचारधारा 234–237
डॉ. ज्ञानेश्वर चिट्टमपल्ले
47 प्रभावी सम्प्रेषण के सिद्धांत 238–241
डॉ. एम. बी. बिराजदार
48 संत कबीर के काव्य में प्रगतिशील चेतना 241–244
डॉ. सूर्यकांत दळवे
49 भारतीय संस्कृति और सिनेमा 245–251
डॉ. मंत्री आडे
50 21 वीं सदी की कविता में आतंकवाद की समस्या का चित्रण 252–255
डॉ. प्रतापसिंग राजपूत
51 हिन्दी उपन्यासों में परम्परागत माता 256–260
डॉ. शिवाजी कदम
52 कबीर और व्यंग्य 261–263
सुश्री. स्वाती देडे
53 बदलते सामाजिक संदर्भ और स्त्री विमर्श 264–267
श्रीमती राणूबाई कोरे

भाग – 2

अ.क्र.	आलेख का शीर्षक/लेखक	पृ.क्र.
01	कर्तृत्ववान शिष्य डॉ. ज्ञानराज गायकवाड़ 'राजवंश'	268–271
02	अज़ीज़ दोस्त के अवकाश के बहाने प्रो. डॉ. अर्जुन चव्हाण	272–277
03	हमें तो तूफानों से खेलने का शौक है वरना... प्रो. डॉ. मधुकर खराटे	278–281
04	निष्ठावान अध्यापक प्रो. डॉ. सुधाकर शेंडगे	282–283
05	हमारे अज़ीज दोस्त डॉ. भीमराव पाटील / डॉ. रघुनाथ देसाई	284–285
06	ज्ञानयात्री प्रो. डॉ. मारुती शिंदे	286–290
07	बंधुवर स्नेही–कबीर सूत्र के निर्वाहक प्रो. डॉ. भरत सगरे	291–294
08	सच्चा स्नेही एवं आदर्श मार्गदर्शक प्रो. डॉ. राणू कदम	295–299
09	एक हिन्दी सेवी मित्र प्रो. डॉ. गणपत राठोड़	300–301
10	ज्ञानयात्री अध्यापक प्रो. डॉ. रणजीत जाधव	302–304
11	बीते–बदलते समय के साक्षी प्रो. डॉ. अनिल काळे	305–307
12	असाधारण व्यक्तित्व के धनी प्रो. डॉ. अशोक मर्डे	308–311
13	बड़े भाई 'आण्णा' प्रा. युवराज गोसावी	312–313
14	मेरे जीवन के सच्चे शिल्पकार डॉ. संभाजी निकम	314–317
15	स्मृति–सत्ता–संभाव्य के सिध्द सरस्वती सुत डॉ. विनोदकुमार वायचळ	318–322

उदय प्रकाश जनवादी कवि हैं। उन्होंने सामाजिक परिस्थितियो का यथार्थ रुप में चित्रण किया है। कवि उदय प्रकाश कहते हैं,

"समकालीन साहित्य की केंद्रीय समस्या यह थी
जो बार–बार सामने आती थी
कि हर बार हड्डी एक हुआ करती थी
और जबड़े कई एक।" [2]

इससे स्पष्ट हो जाता है कि, 21 वीं शताब्दी के आम आदमी की समस्याएँ हर पल बढ़ती हुई दिखाई देती हैं। उदय प्रकाश जनवादी कवि हैं। उन्होंने 21 वीं शताब्दी के निम्न–मध्य वर्ग की संवेदनाओं व्यक्त किया है। जनवादी साहित्य के बार मे मॅनेजर पाण्डेय कहते है, "वास्तव में अब तक का सारा साहित्य अल्पमत का साहित्य रहा है, लेकिन सर्वहारा साहित्य सच्चे अर्थो में बहुमत का साहित्य होता हैं। क्योंकि इसमें सभी शोषित वर्गों के जीवन संघर्ष और चेतना की व्यंजना होती है। अगर किसी साहित्य में सभी शोषित वर्गों का समावेश होता है, लेकिन उसमें सर्वहारा के क्रांतिकारी रूप और भूमिका की व्यंजना होती है, तो ऐसे साहित्य को 'जनवादी या सर्वहारा साहित्य' कहने से कोई खास फ़र्क नहीं पड़ता।"[3] 'इससे स्पष्ट हो जाता है कि, जनवादी साहित्य मार्क्सवादी दर्शन से प्रभावित है और क्रांतिकारी साहित्य है। उदय प्रकाश ने समाज में समता, बंधुत्व, प्रेम स्थापित करने का प्रयास किया है।

21 वी शताब्दि में समाज में अपराधी प्रवृत्ति बढ़ती हुई दिखाई देती है। कवि उदय प्रकाश ने इस बढ़ती गुंडागर्दी को अपने साहित्य में चित्रित किया है। जिसमें आम आदमी की स्थिति को व्यक्त किया है। कवि उदय प्रकाश कहते हैं,

"सबसे पहले मारा गया गाँधी को
और फिर शुरू हुआ लगातार मारने का सिलसिला
अभी तक हर रोज चल रहीं हैं
सुनियोजित गोलियाँ हर पल जारी है दूरभिसंधियाँ
हर रोज होता है जालियाँवाला बाग
पचास साल तक समाज के आखिरी आदमी की
सारी हत्याओं का आँकड़ा कौन छुपा रहा है?
कौन है जो कविता में रोक रहा है उसका वृत्तांत?
समकालीन संस्कृति में कहाँ छुपा है, अपराधियों का वह एजेन्ट?" [4]

प्रस्तुत पंक्तियो में उदय प्रकाश ने कहा है कि, कौन है जो समाज में फ़साद मचा रहा है। आम आदमी को मार रहा है, उसका शोषण कर रहा है। ऐसे व्यक्ति को कौन छुपाकर रख रहा है? ऐसे अनेक प्रश्न उदय प्रकाश समकालीन सामाजिक व्यवस्था पर करते हैं।

कवि उदय प्रकाश ने निम्न–मध्य वर्ग के दुःख, दर्द, पीड़ा को अति यथार्थ रुप में व्यक्त किया है। साहित्य के पुरस्कार के लिए जिस प्रकार

अमीर साहित्यकारों को पुरस्कार दिये जाते हैं। आम साहित्यकार समाज का यथार्थ चित्रण करता है। उसे एक भी पुरस्कार प्राप्त होता नहीं है। पुरस्कारों के बारे में राजनीति होती है। कवि उदय प्रकाश ने राजनेताओं के सामने चापलूसी करनेवाले साहित्यकारों को व्यक्त किया है।

"लेकिन जो विचारधाराओं वाला साहित्य है,
वह भी सरकारी फंडखोरी और
संस्थाओं में सेन्धमारी की ही बीसवीं सदी वाली
इंडो–रूसी तकनीक है।" [5]

कवि उदय प्रकाश ने समाज के बुद्धीजीवी को जागृत करने का काम किया है। क्योंकि बुद्धीजीवी ही निम्न – मध्य वर्ग के दुःख, दर्द, पीड़ा, वेदनाओं को नष्ट कर सकते हैं। लेकिन 21 शताब्दी में बुद्धीजीवी राजनेता की गुलामगिरी, लाचारी स्वीकारते हुए दिखाई देते हैं। कवि उदय प्रकाश लिखते हैं –

"जिसके पास हैं सबसे ज्यादा विचार,
क्यों वही पाया जाता है सबसे लाचार।" [6]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि, उदय प्रकाश ने समाज का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। समाज में प्रचलित शोषित व्यवस्था का भंडाफोड किया है। शोषण का विरोध किया है और सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभुति प्रकट की है। उदय प्रकाश समाज में ऊँच–नीच, शोषक–शोषित, भेदभाव को नष्ट करना चाहते है। उदय प्रकाश का 'एक भाषा हुआ करती है' यह काव्य संग्रह आम पाठकों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है। इसका संवेदना पक्ष जितना बेजोड़ है, उतना ही उसका शिल्प पक्ष भी सक्षम है।

संदर्भ सूचि :

1. उदय प्रकाश, अबुतर कबुतर के मलपृष्ठ
2. उदय प्रकाश, एक भाषा हुआ करती है, (समकालीन साहित्य की समस्या) पृ. 20
3. मॅनेजर पाण्डे, शब्द और कर्म, पृ. 44
4. उदय प्रकाश, एक भाषा हुआ करती है, पृ. 87–88
5. उदय प्रकाश, एक भाषा हुआ करती है, (समकालीन साहित्य की समस्या), पृ. 20
6. उदय प्रकाश, एक भाषा हुआ करती है, पृ. 36

RECENT PERSPECTIVES IN SPORTS AND PSYCHOLOGY

:: Editor ::

Dr Santosh B. Kokil
Director,
Physical Education and Sports
Shri Shivaji College, Parbhani

Vasundhara Arts & Science College, GHATNANDUR

NEW MAN
PUBLICATION
www.newmanpublication.com

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist.Beed 431519

13. The Relation Between Body Fat and Physical Fitness Factors of School Students
Dr Mahesh Rajenimbalkar 105

14. A Study of Impact of the Psychological Factors and Exercise on Sport Performance
Mr Shinde Hemant T. 109

15. Study of Self-Confidence among Sportsman and Non-Sportsman
Madansingh P. Thakur 116

16. Sports and Mental Health
Dr V.H. Dumnar 125

17. Yoga: The Need and Effects on the Players and Sports
Dr Chandrakant B. Satpute 131

18. Factors Affecting Sports Performance
Dr Ranmal P. S. 137

19. Role Of Coaches and Physical Education Teachers in Maintaining Sportsman Spirit
Dr Minanath S. Gomchale 144

20. Sports Psychology in Games and Sports
Dr. Abhijit S. More 152

21. Perfect Diet and Weight Management
Dr. Mahesh Bembade 156

Vasundhara College, Ghatnandur

1.

Covid-19 Pandemic and Mental Health: A Review

Dr. Ganesh Vaykos
Department of Psychology,
B. Raghunath Arts, Commerce and Science College, Parbhani.

Introduction

As we know a new virus known as SARS-CoV-2 (Severe Acute Respiratory Syndrome Coronavirus2) called as COVID-19 emerged in the Wuhan city of China. Although initially the symptoms, diagnosis and treatment were uncertain, it is infecting people throughout the whole world. On 30 January 2020 WHO (World Health Organization) declared a Public Health Emergency of International Concern (PHEIC). In March 2020, the Corona Virus Disease (COVID-19) reached all countries of the world. Because of long incubation periods and higher cases of asymptomatic patients resulted in a rapid spread of the Corona Virus.

In India, the first case of COVID-19 was found on 30 January 2020, thereafter in February only 2 cases of COVID-19 were detected. But from March, more cases came to the forefront and after that, the graph of cases increased rapidly. In June 2020 according to the Ministry of Health and Family Welfare, 266598 confirmed cases of COVID-19 were detected from 32 states. That most of the cases were reported from Maharashtra, Gujarat, Delhi and Tamil Nadu.

In Maharashtra, the first case of COVID-19 was found on 9 March 2020 in Pune and in the first week of May 2020 the highest number of cases was reported in Maharashtra State. In India, Maharashtra is known as the worst affected state. So to avoid the spread of the Corona virus the Central and State governments are taking several actions such as Lockdown, Janta Curfew etc. On 25th March 2020, the

performance. We all know that regularly practicing sports directly benefits our health. It has also been demonstrated that exercise has a positive effect on our mental health. What's more is that practicing sports has many benefits to our brain, including greater focus, greater ability to work with others, and a possible increase in our confidence. On the other hand, and continue with the thread of introduction, the psychological factors in play that exhibit the most impact are confidence, motivation, emotional control, and concentration. Physical factors like strength, diet, injuries, skills, health, time factors also affect on sport-person's sport.

Physical Factors:

a) Sports Injuries: The injury to the player during the games is not fully known and the nature and type of injury varies in all the sports. Therefore, in the game where the player is training or practicing, the player should be informed about the possible injuries in the game by the sports physician and training in the past so that the player can avoid himself from getting hurt during the game this factor effects on player's body. For this, training should also be done in advance to check the qualifications, abilities and mental thinking and equipment of the player and other psychological factors and the medical examination etc. should be reported to the player through sports physician. It is advisable to make the player aware of the possible cause of the injuries inflicted on the player after taking into account the body, psychological, medical factors and other special factors to prevent him from getting hurt during the game or competition. Sports injuries due to sports injuries can be due to lack of sportsmanship technique, insufficient warmup, inadequate physical skills, environmental factors and other psychological aspects.

b) Strength: Everything you can imagine in the game, from throwing a ball to jumping over an obstacle, involves the action of your muscles to make some sports, such as powerlifting, a brief but powerful force. A high level of muscle strength others require marathoners, incredible muscle endurance to maintain the strength to move your body for hours at a time. You can improve your muscle strength and endurance by working in the weight room along with your special sports exercises. A research review from the December 2004 issue of the "Journal of Exercise Physiology on-line" suggests that working with moderate weights is

preferable to exercising with heavier weights and fewer number of repetitions, while muscle patience in any game.

c) Physical Fitness:

There are two related concepts within physical fitness both are affecting on sports performance: general fitness (a state of health and well-being) and specific fitness (an action-oriented definition based on ability to perform specific aspects of sports or occupations). Physical fitness is usually achieved through exercise, proper diet and adequate rest. It is an important part of life. In past years, fitness was commonly defined as the ability to carry out daytime activities without much fatigue. However, due to automation, the rest time increased, this definition became inadequate due to the change in lifestyle after the Industrial Revolution. These days, physical fitness is considered a criterion for the ability to perform work and rest activities efficiently and effectively, to be healthy, to be resistant to low-speed diseases, and to cope with emergent situations.

d) Gender: Boys before adolescence are nearly identical in weight and other body designs. But in adolescence, physical and psychological differences among them begin to emerge. Therefore, keeping in mind these inequalities, different fitness programs should be developed for both the classes.

e) Balanced Diet - Irregular eating malnutrition and under-nutrition reduce a person's physical efficiency to perform in any task, while balanced diet promotes physical fitness and welfare health. A person should take a balanced diet according to age, gender, weight and physical activities performed so he or she can perform in sports welly.

f) Rest: Proper rest and relaxation is also very important after hard work or intense exercise and play, otherwise there is a decrease in physical fitness. In order to recover from fatigue caused by training or intensive practice, it is necessary to follow the principles. Training practice should not be of a time period.

g) COVID-19 : This is the scientific (health) factor which is affecting on Sport, like many sectors of the economy, is to receive a much-needed funding boost to recover from the impact of the global pandemic. COVID-19 has impacted all walks of life and through wider government policy has changed the landscape of

different levels in a sports men life. International Journal of Yoga, Physiotherapy and Physical Education.

References

1. Shashidhara, Effect of yoga on sports performance, International Journal of Yoga, Physiotherapy and Physical Education, Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 20-23
2. West J, Otte C, Geher K, Johnson J, *et al*. Effects of Hatha yoga and African dance on perceived stress, affect, and salivary cortisol. Ann Behav Med. 2004; 28:114-118.
3. Michalsen A, Grossman P, Acil A, *et al*. Rapid stress reduction and anxiolysis among distressed women as a consequence of a three month intensive yoga program. Med Sci Monit. 2005; 11:555-561.
4. Khatri D, Mathur KC, Gahlot S, *et al*. Effects of yoga and meditation on clinical and biochemical parameters of meta-bolic syndrome. Diabetes Res Clin Pract. 2007; 78:e9-e10.
5. Gokal R, Shillito L. Positive impact of yoga and pranayama on obesity, hypertension, blood sugar, and cholesterol: A pilotassessment. J Altern Complement Med. 2007; 13:1056-1057.
6. Selvamurthy W, Sridharan K, Ray US, *et al*. A new physiological approach to control essential hypertension. Indian J Physiol Pharmacol. 1998; 42:205-213.
7. Damodaran A, Malathi A, Patil N, *et al*. Therapeutic potential of yoga practices in modifying cardiovascular riskprofile in middle aged men and women. J Assoc Physicians India. 2002; 50:633-639.
8. McCaffrey R, Ruknui P, Hatthakit U, Kasetsomboon P. The effects of yoga on hypertensive persons in Thailand. Holist Nurs Pract. 2005; 19:173-180.

❑❑❑

18.

Factors Affecting Sports Performance

Dr. Ranmal P. S.

Vasundhara College, Ghatnandur,
Block Ambajogai, Dist. Beed (MS) India 431519.

Abstract: *Playing the game at any level of the competition, in your backyard or professional level, offers many benefits. From improving heart health to improving your feelings of self-esteem, sports can significantly improve your life. But your success in the game, and even what you might expect to get out of the experience, depends on many different factors. Both mental and physical factors affect your performance in sports, so if you believe that your performance is decreasing, consider as many factors as possible. In this research paper considered and focused on some factors which may affect your sport performance. Some of them are mental and some are physical. High temperature and humidity reduce mental efficiency. Low ventilation, lack of proper lighting, noise and physical discomfort impede on sports. All types of deflections affect concentration power and consequently affect sports efficiency. Physical factors like age, environmental situations, food/diet, drinks, time, stress, health etc. Mental factors like inspiration, success, defeat, mental health, punishment etc.*

Introduction:

High performance athletes ensure that 90% of your sporting success is due to your ability and mental training. There is no major difference between some athletes and others in terms of ability, training or physical ability in high level professional sports. Therefore, psychological factors in sport are the difference and determinant for achieving success. It is clear that mental factors and physical factors both affect athletic performance, not only among high-level athletes, but also for anyone who practices sports. Currently, there is evidence to support a hypothesis: in sports, whether elite or leisure, it may be useful to develop some psychological tools that enhance competence and sports

is important for the athlete, coach, and sport consultant, as this knowledge helps to ensure the appropriate stress management skills are applied.

g) Mental Abilities:

Here mentioned, in addition to the physical, there is also something like psychological performance. Part of this is what is known as mental fitness, which provides information about mental resilience. However, the psyche also has a direct impact on the performance that can be achieved in sports. Motivation, concentration, emotional control and self-confidence are all decisive factors in developing the mindset that is essential for physical performance. However, these are also skills that can be improved if you train them in a targeted manner.

Conclusion:

Finally, uncover that game, especially the higher level, has a lot to do with grief and pain. Not only with the person who produces the exercise, but also with the person who indirectly produces it. Therefore, if you ever have the opportunity to present a professional athlete in a sports, you can see this suffering reflected on his or her face. Therefore, Sport is an excellent school for our personal resilience and many techniques have been applied from psychology and physically too that can be used in other contexts of high competition and demand in sports performance. We can said that dealing with these factors success is depended. When we manage risk, emotion, physical factor as well as psychological factors both are affecting on performance of any player during his activities. Sport is an art so everybody can conquer the factors affecting on his/ her performance.

Reference:

1) https://www.sciencedirect.com/topics/medicine-and-dentistry/athletic-performance
2) Devinder Kansal K., Textbook of Applied Measurement Evaluation and Sports Selection, Delhi: Sports and Spiritual Science Publication, 2008, 530.
3) Suresh Kutty K. Foundation of Sports and Exercise Psychology, New Delhi, Sports Publications, 2004, 130.
4) Kamlesh ML. UGC-NET Digest on Papers II & III Physical Education, New Delhi: Khel Sahitya Kendra, 2011, 404-413.

5) How To Overcome Fear and Anxiety In Sports - Craig Sigl https://www.youtube.com/watch?v=ivyg5CdzbK8
6) Cratty BJ. Psychology and Physical Activity, Englewood Cliffs, N.J: Prentice Hall Inc, 1986, 15.
7) Singh A. Sports Psychology, A study of Indian Sportsman, Delhi: Friends publication, 1992, 36-37.

❑❑❑

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist.Beed 431519

sports participation but in the process, increased the workload on sports club volunteers who must now shoulder the additional responsibility of tracking and tracing participation at training as an unofficial extension of the health service.

h) Social Skills: It may seem a bit far-fetched at first, but there are also social factors that have an impact on physical performance that should not be underestimated. In team sport in particular, communication and cooperation are of enormous importance - and not only so that the team can function, but also to better motivate the individual team members and thus make them more productive. But social skills can also play a role in individual sport. External living conditions also have a certain influence on the performance of each individual, although the reasons for this can vary greatly from person to person. In general, however, it can be said that both communication and cooperation, dealing with conflicts and an understanding of morality are important, but have different weightings for different people.

Mental Factors:

a) Motivation: This is very important in any task in which we want to optimize performance, especially in sports. Think that athletes are constantly exposed to ups and downs, triumphs, and defeats, and in many cases in intrinsic motivation, love for what they do, for letting them get up after a bad pass, a disastrous launch, or more Motivates for Worse was on his mind.

b) Concentration: Athletes on the other hand require a great capacity for concentration. All actions, even the simplest or most intuitive, demand concentration. Any poorly executed movement can result in failure, deterioration, or injury that wastes months of preparation. Therefore, rarely, an athlete is distracted by demanding training.

c) Reward and Punishment: All types of rewards are powerful incentives for learning. But these days, sports awards in India are more abused than used properly in sports education. The first division of distinction in sports is an incorrect reward. Work has its own rewards. They become dependent on the rewards. They refuse to work without any incentive of reward. All sports activities should be done and not immediately rewarded. Fear in punishment after mistake in sports practice, apprehension, may

affect the disciple for work and learning, but not in all cases. Sometimes punishment produces bad reactions, vengeance, hatred and hatred. Experimental studies suggest that punishment often interferes with complex sports learning activities, when punishment often occurs. The absence of punishment becomes the basis of reduced activity on the part of the pupil. In the absence of fear, they may disobey and waste their time.

d) Emotional Control: Developmental mental training exercises that help control emotions or doubts. It can differentiate between an athlete's success and failure. In this sense, many times an athlete's performance is affected by low emotional control because he has let emotions affect his concentration.

e) Confidence: Finally, confidence in one's own abilities to perform an action successfully is a personal condition necessary to achieve victory. Having sports confidence means having self-confidence which is your belief in your ability to complete a physical skill or task required in your sport. Our confidence can be bolstered at times by others' belief in us; but, ultimately, we have to believe in our own abilities to go out there and perform our best. Confidence results from the comparison an athlete makes between the goal and their ability. The athlete will have selfconfidence if they believe they can achieve their goal. When an athlete has self-confidence, they will:

- Persevere, even when things are not going to plan.
- Show enthusiasm and motivation.
- Be positive in their approach and take their share of the responsibility in success and failure.

f) Stress Management: If manage the stress before the sports activity we can win half success. Stress management techniques in sport typically focuses on somatic, behavioral, and cognitive affective symptoms of stress/ pressure. Somatic responses involve the athlete's physiological reactions, such as changes in heart beats, respiration/ breathing, sweating, muscular tension and control, and pupil dilation. Finally, cognitive affective responses include the thoughts associated with the stress, including worries, beliefs, apprehensions, and negative expectations about performance as well as action plans to manage stress. Distinguishing between and being aware of each of these aspects

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgaon (Kale) Tq. & Dist. Latur

VASANTRAO KALE MAHAVIDYALAYA,

DHOKI, Tq. & Dist.- Osmanabad (MS).

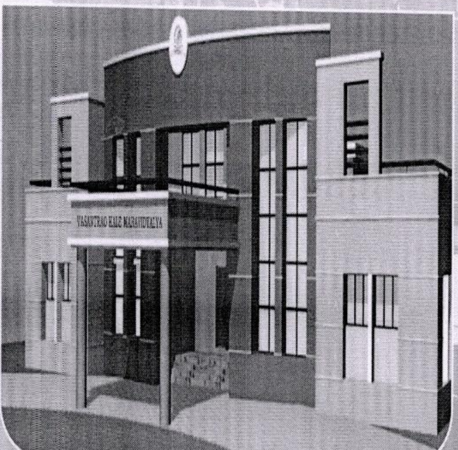

: Special Issue Published By :

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal

ISSN 2349-638x Impact factor 6.293
Peer Review Journal
Website : www.aiirjournal.com | Email : aiirjpramod@gmail.com
Chief Editor - Pramod Tandale

One Day Online National Level Conference in Interdisciplinary subject

Covid-19 Pandemic and its Impact on Socio - Economic Development in India

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgaon (Kale), Tq.& Dist. Latur
Affiliated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad

NAAC Accrediated 'B' Grade

VASANTRAO KALE MAHAVIDYALAYA,

DHOKI, TQ. & DIST. OSMANABAD. (MS)

Tuesday, 30th June 2020

ISSN 2349-638x
Impact Factor 6.293

Dr. Balasaheb Maind
Editor

Pri. Dr. Haridas Fere
Chief Editor

Organized By
Department of Economics
Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgaon (Kale) Tq. & Dist. Latur
Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki
Tq. & Dist. Osmanabad (MS).

Sr.No.	Name Of Author	Title Of Paper	Page No.
36	डॉ. संदीप गोरख साळवे	उच्च शिक्षालेते समय छात्रों को आने वाली आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का अध्ययन	103
37	योगेश्वर साहू	आत्मनिर्भरता : भारत के पुनरुत्थान की योजना	106
38	डॉ.राजकुमार पंडितराव जाधव	कोविड-19 का भारतीय समाज पर पडा गहरा प्रभाव	112
39	प्राचार्य डॉ. हरिदास फेरे	कोवीड-19 महामारीचे महाराष्ट्राच्या अर्थव्यवस्थेवरील महासंकट	114
40	प्रा.डॉ.डी. बी. तांदुळजेकर	करोणा विशाणू संकट आणि भारतीय अर्थव्यवस्था	119
41	प्रा, डॉ, गोवर्धन खेडकर	कोरोना विषाणू आणि लॉकडाऊन नंतरची भारतीय अर्थव्यवस्था	122
42	डॉ. अर्जुन मोहनराव मोरे	भारतीय कृषी व्यवस्थेवर (Covid 19) कोरोना व्हायरसचा परिणाम : एक अभ्यास	124
43	प्रा. डॉ. अविनाश विलासराव पवार	कोविड-19 चा भारतीय समाज जीवनावर परिणाम	129
44	प्रा.डॉ. अनंत नरवडे	कोविड-19 चा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम	134
45	प्रा.डॉ. बी.व्ही. मैंद	आत्मनिर्भर भारत अभियानाची वैशिष्टये	139
46	डॉ. मिनाक्षी भास्कर जाधव	जागतिक महामारीचा अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम	144
47	डॉ. बालाजी तुळशीराम घुटे	कोव्हीड-19 आणि पर्यावरणीय बदल	148
48	प्रा.डॉ. व्ही.डी. आचार्य	Covid 19 महामारी आणि सरकारची धोरणे : एक राजकीय अभ्यास	152
49	डॉ. शैलजा भारतराव बरूरे	कोरोना काळातील भारतीय सामाजिक वास्तव	156
50	प्रा. डॉ. कांतेश्वर जी. ढोबळे	कोवीड - १९ महामारीचा भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या विविध क्षेत्रावरील प्रभाव	159
51	प्रा.आनंद मुसळे	कोविड-19 आणि त्याचा सामाजिक परिणाम	162
52	प्रा.प्रदीप दाजीबा पाटील	कोविड-19 : वास्तव आणि अपेक्षा	167
53	प्रा.डॉ.सुदाम वसंतराव पवार	कोव्हीड-19 आणि शैक्षणिक क्षेत्र	172
54	डॉ.सुधाकर अच्युतराव सांगळे	लॉकडाऊनचे अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम	176

भारतीय कृषी व्यवस्थेवर (Covid 19) कोरोना व्हायरसचा परिणाम : एक अभ्यास

डॉ. अर्जुन मोहनराव मोरे
(अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख)
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर
ता. अंबाजोगाई जि. बीड

प्रस्तावना :

भारत हा कृषीप्रधान देश आहे. या देशाची 65 टक्के लोकसंख्या कृषीव्यवसायाशी संबधीत आहे. भारतीय अर्थव्यवस्थेत कृषी व्यवसायाला अत्यंत महत्वाचे स्थान आहे. कृषी व्यवसाय हा अर्थव्यवस्थेचा कणा व आत्मा आहे. म्हणूनच म्हटले जाते की, कृषी व्यवसाय हा जगातील अत्यंत पुरातन व्यवसाय असून शेतकरी हा विश्वाचा पोसिंदा आहे. लोकांना लागणाऱ्या अन्नधान्याचा पुरवठा पशुसंवर्धनासाठी लागणारा खाद्य पुरवठा आणि उद्योगांना लागणारा कच्चामाल हा कृषी व्यावसायातुनच पुरवला जातो. राष्ट्रीय नमुना समितीच्या अहवालानुसार भारतातील एकुन 6,38,588 गावांमधुन 64.30 टक्के लोकसंख्या ग्रामीण भागात वास्तव्य करते. या लोकसंख्ये पैकी 39.4 टक्के शेतकरी आहेत. तर 24.90 टक्के शेतमजुरांच्या स्वरूपात कार्यरत आहेत. या शेतमजुरांमध्ये शेतकऱ्याला शेती श्रमा करीता शारीरिक श्रमाची मदत म्हणून बाराबलुतेदारांचा सहभ्ाग लाभलेला आहे. त्याच बरोबर शेती नसणाऱ्या बटईदार, मजूर, शेतमजूर, सालगडी, इत्यादी लोकांचाही शेती व्यावसायाशी संबंध येत आहे.

भारतात शेतीचे वर्गीकरण शेतीला पाण्याच्या सुविधा वरून करण्यात आले आहे. त्यामध्ये बागायती शेती, निम्मबागायती शेती, कोरडवाहु शेती, इत्यादी होय. बागायती शेतीला बाराही महिने पाणी पुरवठ्याची सुविधा असते. तर निम्मबागायती शेतीला हंगामी पिकापुरतीच पाण्याची व्यवस्था असते तर कोरडवाहु शेती पूर्णत: पाऊसावर अवलंबुन असते. बागायती शेतीत द्राक्षे, चिकू, संत्री, मोसंबी, ऊस, हळद, आद्रक, टरबुज, खरबुज,मिर्ची, आणि पाले भाज्या अशा स्वरूपाची पिके घेतली जातात. तर निम्मबागायती शेतीमध्ये कांदा, गहु, हरभरा, ज्वारी, भुईमुंग या पिकांचा समावेश होतो. तर कोरडवाहू शेती ही पूर्णपणे नैसर्गीक पाऊसावर आवलंबुन असते. या शेतीत तुर, उडीद,मुग, तीळ बाजरी, सोयाबीन, कापूस, हरभरा, ज्वारी, जवस, करडी, इ. स्वरूपाची पिके घेतली जातात.

बागायती, निम्मबागायती, कोरडवाहु शेती व्यावसाया करीता मोठ्या प्रमाणावर मनुष्यबळ आणि आर्थिक खर्चाची आवश्यकता असते. कारण शेतीमशागतीकरीता नांगरणी, पाळी, इत्यादीचा खर्च, संकरीत बि-बियाने खते, औषध फवारणी, मनुष्यबळ, श्रमशक्ती, पिकांची काढणी, खुडणी, मळणी, आडत, हमाली, इत्यादीचा मोठ्या प्रमाणावर खर्च येतो. या सर्व आर्थिक खर्चाची भरपाई आणि शेतकऱ्यांना पुढील वर्षाकरीता शेती खर्च आणि कौटुबिक खर्चाची व्यवस्था शेती उत्पन्नातून होणे आवश्यक असते. या खर्चाची व्यवस्था झाली तरच शेती व्यवसाय करणे आर्थिक दृष्ट्या फायदेशीर नसतो. परंतू या शेती व्यवसायामध्ये नैसर्गीक आपत्ती, रोग, व्हायरन्स अथवा सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजकीय ताण -तणाव संघर्ष अशी परिस्थिती निर्माण झाली. तर या सर्वांचा परिणाम कृषी व्यवसायावर होतो. याचाच एक भाग म्हणून चीन मध्ये सुरू असलेला कोरोना व्हायरस ना (Covid 19) सर्वत्र पसरू नये या करीता केंद्र शासन आणि राज्यशासन यांनी सर्वत्र लॉकडाऊन केले. त्यामुळे सर्व व्यवहार स्तब्ध झाले. या कोरोना व्हायरसचा (Covid 19) भारतीय कृषी अर्थव्यवस्थेवर

GHATNANDUR College

फळे, पालेभाज्या दुध इत्यादी मालाचे नुकसान : कृषी व्यावसायात शेतकऱ्यांनी उन्हाळी माल विक्री करीता तयार केलेली फळे त्यामध्ये टरबुज, कलिंगड, खरबुज, द्रांक्षे, चिकू, आंबे, मोसंबी, संत्री, ह्या फळ बागातील माल, पालेभाज्या, दुध लॉकडाऊनमुळे बाजार पेठा उपलब्ध न झाल्यामुळे तो माल जागेवरच नासून गेला. या फळबागा पालेभाज्या, दुध इत्यादींवर शेतकऱ्यांनी केलेला आर्थिक खर्च वाया गेला. विक्रीला आलेला माल जागेवरच नासून गेला. यामुळे कृषी व्यवसायात शेतकऱ्यांना मोठ्या प्रमाणात आर्थिक् तोटा झाला आहे.

कृषी व्यावसायाला आर्थिक भांडवलाच्या पुरवठ्याची आवश्यकता :- कृषी व्यावसायाकरीता मोठ्या प्रमाणावर आर्थिक भांडवलाची आवश्यकता असते. कोरोना व्हायरस लॉकडाऊनमुळे शेतकऱ्यांना शेती व्यवसायात मोठ्या प्रमाणात आर्थिक तोटा झाला आहे. त्यांच्याकडे शेती व्यावसायावर खर्च करण्याकरीता पैशाची उपलब्धता नाही. त्यातच त्यांना शासनाकडून कोणत्याही प्रकारची आर्थिक मदत मिळालेली नाही. त्यामुळे शेती व्यवसाया करीता शासनाने शेतकऱ्यांना आर्थिक मदत करून अल्पदराने कर्जपुरवठा करणे आवश्यक आहे. तेव्हाच कृषी व्यावसायातुन शेतकऱ्यांचा आर्थिक दर्जा उंचावेल आणि कृषीव्यवसाय आर्थिक दृष्ट्या बळकट होईल.

कृषी उद्योगावर परिणाम : कोरोना व्हायरसचा कृषी उद्योगावर मोठ्या प्रमाणावर परिणाम झालेला दिसून येतो. त्यामध्ये शेतीची उन्हाळीमशागतीकरीता मंजूर मिळाले नाहीत. त्यामुळे फळ बागांची कटाई झाली नाही. भाजीपाल्या खालील शेतीची मशागत झालेली नाही. त्याच बरोबर शेतकऱ्याला कोरोना व्हायरसमुळे मोठ्या प्रमाणावर आर्थिक तोटा झाला आहे. त्यामुळे अनेक शेतकऱ्यांनी द्राक्षे, केळी, मोसंबी, संत्री आंबे इत्यादीच्या बागा काढुन टाकल्या आहेत. शेतकऱ्यांनी दुध विक्रीची हॉटेल, डेरी बंद झाल्यामुळे गाय म्हैसी विकल्या आहेत. शेतकऱ्यांना सालगडी मजूर यांचा रोजगार परवडत नसल्यामुळे त्यांनी शेतीत कडधान्याचे पीक घेण्यावर अधिक भर दिला आहे.

कृषी रोजगारावर परिणाम : कोरोना व्हायरस (Covid 19) चा परिणाम कृषी रोजगारावर झालेला दिसून येतो. पुणे, मुंबई, नागपूर, नाशिक, इत्यादी मोठ-मोठया शहरामध्ये खेडयातील मजूर रोजगारा करिता गेले होते. या सर्व शहरांमध्ये लॉकडाऊन जाहिर केले तेव्हा अनेक मजूर शहराकडून आपल्या खेडयात आले. खेडयात त्यांना दुसरे काम नसल्यामुळे ते अल्प मजुरीवर शेतीत मजूर म्हणून काम करु लागले. त्यामुळे शेत मजूरांच्या मजुरीचे दर कमी झाले आहेत. तर अनेक बटईदार शेतकऱ्यांनी शेती व्यवसाय तोटा झाल्यामुळे बटईने केलेली शेती सोडून दिली आहे. शेतकऱ्यांनीही शेतीतील शेतगडी, मजूर यांची संख्या कमी केली आहे.

अन्न-धान्य पुरवठयावर परिणाम : शहरी समुदाय भाजी मंडई, आडत दुकान येथे भाजीपाला फळे, गहू, ज्वारी, दाळी, दुध इत्यादी अन्न धान्य पुरवठा करण्याचे काम शेतकरी करीत आहेत. या अन्नधान्याच्या पुरवठयामुळे शहरी समुदयाची अन्न धान्याची समस्या सोडवली जात आहे. कोरोना व्हायरस आजारामुळे सर्व शहराचे रस्ते लॉकडाऊन केले. त्यामुळे शहराला होणारा अन्न धान्याचा पुरवठा बंद झाला. शेतकऱ्याचा माल ग्राहक नसल्यामुळे पडून राहिला तो अल्पदराने खेडयातील दुकानदारांना विकण्यात आला. या अन्न पुरवठयामध्ये ही शेतकऱ्यांचात तोटा झाला. याचा परिणाम कृषी अर्थव्यवस्थेवर झालेला दिसून येतो.

कृषी बाजारपेठावर परिणाम : शेतकऱ्यांच्या मालाची खरेदी विक्री करण्याकरिता कृषी उत्पादन बाजार समिती, महत्त्वपूर्ण भूमिका पार पाडते. या कृषी उत्पादन बाजार समिती मध्ये शेतकऱ्यांचा माल शासनाच्या बांधील भावाप्रमाणे खरेदी केला जातो. तर ज्या शेतकऱ्यांना आपला शेतीमाल नगदी पैशाने तात्काळ विक्री करावयाचा असेल तर तो मोंढयातील आडत

औद्योगिक, आर्थिक, कृषी, आरोग्य अशा विविध क्षेत्रावर झालेला आहे. या परिणामाची जाणीव होऊन त्यावर उपाय योजना करण्याकरीता मदत होऊ शकते.

संदर्भ सुची :

1) डॉ. दा. घो. काचोळे : 'समाजशास्त्रीय संशोधन पध्दती,' कैलाश पब्लिकेशन, औरंगाबाद 2006
2) डॉ. प्रदिप आगलावे : 'संशोधन पध्दती,' मंगेश प्रकाशन, नागपूर 196
3) डॉ. वसुंधरा पुरोहित : 'भारतीय अर्थशास्त्र' विद्या बुक्स पब्लिकेशन, औरंगाबाद 2003
4) डॉ. वसुंधरा पुरोहित : 'कृषी अर्थशास्त्र,' विद्या बुक्स पब्लिकेशन, औरंगाबाद 2005
5) डॉ. दु. बी. कौंडेवार : 'भारतीय अर्थव्यवस्था,' विनय प्रकाशन, औरंगाबाद 1995
6) प्रा. डॉ. दत्तात्रय भुतेकर : 'कृषी अर्थव्यवस्था,' कैलाश पब्लिकेशन, औरंगाबाद
7) डॉ. टी. व्ही. पोळबे / डॉ. विलास खंदारे : 'कृषी विकासाचे अर्थशास्त्र,' चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Kisan Shikshan Prasarak Mandal,
Borgoan (Kale) Tq. & Dist. Latur's

NAAC Accredited 'B' Grade

Vasantrao Kale Mahavidyalaya,

Dhoki. Tq & Dist - Osmanabad.

&

Akhil Maharashtra Itihas Parishad, Pune

Jointly Organize

One Day International Conference on

"The History of Pandemic like Covid-19 & Its Impat on Socio-Economic & Political Sectors in the World"

Tuesday, 20th October 2020

ISSN No. : 2278-9308
Impact Factor : 7.675

Editor
Dr. N. P. Manale
(Convenor)

Chief Editor
Dr. Satish Kadam
(President, AMIP)

Executive Editor
Dr. Haridas Fere
(Principal)

Organized by

Department of History
Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgoan (Kale) Tq. & Dist. Latur's
VASANTRAO KALE MAHAVIDYALAYA, DHOKI
Tq & Dist.- Osmanabad - 413508

Vasundhara Arts & Science College
GHATNANDUR

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 252 (CCXLII)
ISSN : 2278-9308
September, 2020

GHATNANDUR

41	"Impact of COVID-19 Pandemic on Indian Economy" **Dr. Parag P. Kadam**	161
42	Importance Of Food And Beverage Inventory Controlling For Hotel Industry – Post Covid-19 Reopening For Business Sustainability **Kapilesh Mangal**	166
43	Indian Economy in the wake of COVID-19 **Dr.Sandeep Gupta,**	172
44	Brief History Effect of COVID-19 Pandemic in Human Daily Life **Shri Sidheshwar Chandrakant Suravase**	176
45	HISTORY OF PANDEMIC & COVID – 19 **Dr. Meena Chandrabhan Sale**	178
46	Migrants in India After Covid- 19 Pandemic: A Journey of Survival **Dr.Anita Mudkanna**	182
47	Impact of Covid-19 on the world Economy **Sanjay Prabhakar Shinde**	186
48	History of Pandemic and COVID-19 **Vijaysinh Sundarrao Deshmukh**	188
49	Role of Communication Skills in Higher Education **Dr. Arjun Mohanrao More**	191
50	The Impact Of Covid -19 On Indian Tourism and Related Industry **Sushen N. Maind**	194
51	Impact of Pandemic on social life **Dr. Nilofer Shakir,**	197
52	History of Pandemic & Covid-19 **Dr.Manjusha Mukundrao Babje**	200
53	Impact Of Covid-19 On Rural And Urban India **Dr. Suryakant Ratan Chaugule**	206
54	COVID-19 Problems & Solutions for Education System **Dr. P.D. Hudekar**	214
55	Impact Of Covid-19 On Higher Education In India **Shinde Sainath Bhanudas**	221
56	Agriculture And Economic Growth **Dr. Santosh Kumar**	224
57	COVID-19 pandemic and challenges for socio-economic issues, and Health in India **Mr.Mote Bhairavnath Babruwan**	228
58	Challenges And Opportunities Of Retailing In India During Covid-19 Pandemic Period **Dr.Balaji Shivaji Rajole**	232
59	"Impact of covid-19 pandemic on environmentel factors in the world" **Raju Balasaheb Bomble**	236
60	Impact of COVID-19 pandemic on Global tourism **Dr. Priyanka Khose**	241
61	Indian Economy and Supply Chain trouble due toCOVID-19 **Dr. Suhas Avhad**	244
62	COVID 19 : Impact on Rural and Urban Life in India **Dr Chhaya Ramesh Dapke.**	247

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal | ISSN : 2278-9308, November 2020
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 252 (CCXLIII)

Role of Communication Skills in Higher Education

Dr. Arjun Mohanrao More
HOD Economics Vasundhara College, Ghatnandur, Block Ambajogai, Dist. Beed, Maharashtra 431519

Abstract:

Higher education or any other field of education, communication plays vital role for information transformation, presentation, expression, analysis, feedback, improvement, better understanding, impact on listeners or audience or readers. So teaching field in not apart from this cycle. In higher education the success of the teaching-learning process depends on the teacher's knowledge and the teacher's ability to transfer information to the students. Communication plays a vital role in the transfer of knowledge to take place. The process is facilitated by the verbal communication or nonverbal communication that not only helps in the sharing of the knowledge but also creates an environment to facilitate the sharing of ideas, thoughts, concepts between the teacher and the students of higher education. In this regard, the paper of discussion presents the role of communication in higher education.

Introduction:

Without communication no one can imagine the process of learning will fulfill. Whether a teacher or professor is teaching to students with effective communication is required to guarantee the success of our learners. Need to communication between teacher and learner and if proper communication does not always occur problems must occurs. Lack of poor communication the purpose of idea conveying could not happen and ineffective communication must collapse. Once communication amongst the teacher and student is proper and understandable, both would benefit. Effective communication helps people learn easily. The perfect relationship between the teacher and the learner will develop by better communication, and it creates a positive environment in the learning atmosphere. In higher education the ways of different communication like e-communication, technical way communication, traditional way communication. Teachers have to use different ways of communication and find out which is impactful.

Objectives:

The main objective of the study is every student get proper knowledge with the help of teacher's effective communication. As we know that communication plays vital role in idea, concept, thoughts, knowledge convey it is not sufficient to only pass the idea from one person to another we have to analyze that the idea is successfully transferred properly. Everywhere teachers take a strong leadership role in motivating and enthusing the use of pedagogically grounded teaching practices that make sure all students feel involved. Communication takes place through channels. Within the teaching profession, communication skills are applied in the teachers' classroom management, pedagogy and interaction with the class.

Different Reviews:

According to M. Lewis in Communication and Education, the issues in education are the issues in communication. Lewis states that educators "appear to be working in a peculiarly stringent isolation". (Lewis, 1952, p. 28) Teachers tend to miscommunication, which later leads to the failure of dealing with miscommunication effectively and unproductive student learning outcome.

The different why communication skill takes an essential role in the student's learning level outcome. Petrie states that the child and their relationship with an adult, in this case their educator, actually is the foundation on which definite communication can be made. (Petrie, 2011) A strong relationship leads to effective communication which leads to enthusiastic students eager to learn.

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 252 (CCXLIII)
ISSN 2278-9308
November 2020

A change in the behavior of an individual:

A change in the behavior of an individual, desirable to society, which has been brought without or with a set of instructions, is termed as learning. So often, the teachers create a particular type of environment of skilled communication to bring a particular learning. Such a deliberate manipulation of environment to facilitate the learning process of an individual to have a desired learning outcome is called teaching.

Methods:

Teaching to higher level students is regarded as providing opportunities for students to learn. It is interactive process as well as an intentional activity. The term teaching method refers to the general principles, pedagogy and management strategies used for classroom instruction but it need proper skills. The choice of the teaching methods help in skill based performance depends on what fits a teacher i.e. his or her educational philosophy, classroom demographic, subject areas. The teaching theories may be placed broadly into two categories or approaches, namely the teacher centered and student centered.

a) teacher centered:

In teacher centered approach the teacher is the authority. Students are considered as empty vessels, (here we can consider good communication between them) whose primary responsibility to passively receive information with an objective of test and assessment. Here, the most important role of the teacher is to pass knowledge and information about communication skills onto their students. The students learning is evaluated through objectively scored tests and assessments as well.

student centered:

In student centered approach the teachers are primarily concerned with the coaching and facilitating the student's learning and overall comprehension of the communication skills content. The learning of the students can be measured through both formal and informal ways of tests and assessment, including group discussions, class projects, and class involvement. Teachers analyze continuous the learning outputs of students and make sure feedback from the students who learnt and understand properly by their communication. Communication skill considers the learner then need to plan of express.

Strategy:

Communication skill is primarily an intentional activity. The communication graduate knows and understands that competent communication requires strategy and intention. It involves the capacity to read and interpret contexts and situations to readily tailor and develop messages. For centuries, scholars and teachers have theorized strategies for effective, intentional communication skill, and knowledge of those theories and concepts is essential.

Conclusion:

Over all we can say that good communication skill is required for all. Students expectation will fulfill through the proper conveyed ideas and good delivered lectures. The communicator not only responsible for his speaking style, delivery strategy he have to responsible for good and understandable manner. Good communicator pedagogy for higher education is concerned for both student centered and teacher centered after all this is a skill and every skill has its another perspective of art. Communication skill takes an essential role in the student's learning level outcome.

References:

1. Hargis, Donald E. 1950. "The General Speech Major." Quarterly Journal of Speech 36, no. 1: 71-76.
2. Morreale, Sherwyn P., Michael Moore, Donna Surges-Tatum, and Linda Webster, Eds. 2007. The Competent Communication Speaker Speech Evaluation Form. Washington, DC: National Communication Association.
3. http://mhrd.gov.in/teacher-education-overview

GHATNANDUR

Vasundhara Arts & Science College

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal

Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 252 (CCXLIII)

ISSN : 2278-9308

November 2020

4. Sravani (2016). Communication Skills Importance for Teachers, Students & Employees, Available at http://content.wisestep.com/communication-skills-importance-teachers-studentsemployees/. May 8, 2016.
5. Spitzberg, Brian H. 1983. "Communication Competence as Knowledge, Skills, and Impression." Communication Education
6. Robinson et. Al. (2007). The Role of Communication in Student Achievement. Academic Exchange Quarterly.
7. *http://www.indiastudychannel.com/forum/79268-What-definition-Teaching.aspx*

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Kisan Shikshan Prasarak Mandal Borgaon (Kale) Tq. & Dist. Latur's

Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki

Tq. & Dist. Osmanabad.(MS)

(NAAC 'B' Grade)

Internal Quality Assurance Cell & Department of Economics

Organizes

One Day online National Conference in interdisciplinary subjects on

'Covid-19 Pandemic and its Impact on Socio-Economic Development in India'

Certificate

This is to certify that Mr. / Mrs. Dr. Arjun Mohanrao More

has attended / paper reading One Day online National Conference on 'Covid-19 Pandemic and its Impact on Socio-Economic Development in India' on 30th June, 2020 which was organized by Department of Economics, of our college. Hence certified.

Dr. Balasaheb Maind	Dr. Pradeep Ingale	Dr. Haridas Fere
H.O.D. Economics & Convener	IQAC Coordinator	Chief Organizer & Principal

GHATNANDUR

Theories of INTERNATIONAL POLITICS

Vasundhara Arts & Science College
GHATNANDUR

Edited by

Prof. (Dr.) C. B. Bhange

Ajay Kumar | Arbind Kumar

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Td. Ambajogai Dist.Beed 431519

Bharti Publications

New Delhi-110002 (India)

Copyright © Editors

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any from or by any means, without permission. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Disclaimer: The views expressed in the paper/chapter are those of the Author (s)/contributor (s) and not necessarily of the publisher and editors. Author (s)/contributor (s) are themselves responsible for the facts stated, opinions expressed, conclusions reached and plagiarism. The publisher and editors of the book bear no responsibility.

First Published, 2020

ISBN: 978-93-89657-82-1

Published by:

Bharti Publications

4819/24, 3rd Floor, Mathur Lane

Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002

Phone: 011-23247537

Mobile: +91-989-989-7381

E-mail: bhartipublications@gmail.com

info@bharatipublications.com

Website: www.bhartipublications.com

Printed by S. P. Kaushik Enterprises, Delhi

Vasundhara Arts & Science College, GHATNANDUR

CONTENTS

Preface v-vi

1. International Politics Meaning, Nature and Scope 1-4
2. Idealism: A study of Eliminating War and Other Evils from International Relations 5-10
3. International Relations and Politics: Theory of Realism 11-15
4. Realist Theory 16-22
5. Realist Theory in the Study of International Relations 23-28
6. Hans Morgenthau's Realism 29-36
7. Revisited Morgenthau's Six Principles of Political Realism 37-42
8. Hans J Morgenthau's Political Realism 43-49
9. Different Stages of Political Realism 50-56
10. "Anarchy" in Kenneth Waltz's Works: A Critical Evaluation 57-61
11. Idealism vs Realism Theory 62-64
12. Marxist Approaches in International Relations: Focus on Core to Periphery 65-70
13. Critiquing Morgenthau's Theory of Realism from Feminist Perspectives 71-75
14. Liberalism: as an Approach 76-83
15. Revisiting Liberal Notion of Democratic 84-90

16. Bhutan – China Relations: A Preservative of Zero Sum Game 91-96

17. The 4/21 Moment in Sri Lanka: Its Implications and the Way Forward to Counter Radicalization 97-102

18. International Relations: A Third World Perspective 103-107

19. The Timeless Wisdom of Realism 108-116

20. Realism and Indian Security Challenges from its Neighbors 117-120

Chapter 20

Realism and Indian Security Challenges from its Neighbors

Makarand Baliram Jogdand[1]

Introduction

India's neighbors call him his elder brother. His anti-India domestic politics often revolve around his so-called India policy, so that he can accuse India of wanting to dominate him. In fact it tries to justify China's growing presence in South Asia. This increasing presence of China in the last few decades has affected India's role as a safeguard in South Asia as well as in the Indian Ocean region. India's strategic environment is full of turmoil. China's rise over a decade has been instrumental in Asia's continued growth, but has also created unprecedented pressure on the security system. China's 'One Belt One Road' (OBOR) initiative to connect with the west is quite transformative, but it is likely to exacerbate those pressures. These trends of internal and external balance against China are suitable for India and it is constantly moving closer to the US and Japan as well as making deep inroads in the security system of Ocean Asia. In contrast to these slow processes, the vacuum emerging in Afghanistan's power can challenge India's power and security fairly quickly. Due to the rivalry between Saudi Arabia and Iran, the location from the Mediterranean to the Arabian Sea is being destroyed much faster.

Methodology

India and Neighbor Countries

In 2014, when the NDA government led by Narendra Modi took power, it spoke of a 'neighborhood first' policy. It felt that within the next few years South Asia would see a strong foreign policy of India. In fact, the first neighborhood policy was visible at the beginning only when the Modi government invited the heads of

1 Assistant Professor and HOD, Political Science, Vasundhara College, Ghatnandur, Ambajogai, Beed, Maharashtra.

Arts & Science College GHATNANDUR

[library stamp]

nations of South Asia for their swearing-in ceremony. After this Modi himself traveled to most of the neighboring countries except Maldives which was going through a period of political upheaval. Some of his visits also generated enormous enthusiasm, but unfortunately there has not been any major qualitative change in India's relations with neighboring countries of South Asia, nor has India been able to curb China's growing initiative in South Asia. Has happened. All these situations show how India has to deal with the complex challenges of the neighborhood.

India and Nepal

When Narendra Modi visited Nepal, it was the first visit of any Indian Prime Minister to Nepal in the last seventeen years. His visit showed considerable courtesy between the two countries and it was hoped that India-Nepal bilateral relations would be further strengthened during the NDA government. But soon the bilateral relations began to deteriorate due to the changing equations of Nepal's internal politics and the sidelining of the *Madheshis* by the enlightened class of politics there. This was indeed a surprising development, as the Nepalese themselves, in particular, have been saying that their political are under the influence of India. Naturally, this is not completely true and the fact is that in recent times, the influence of other forces on Nepal, similar to or to some extent beyond India, has increased.

India and Bangladesh and Interfere of China

It is often said that India's relations with Bangladesh are the best today. But China has tried to dent in this relationship in many ways. Some time ago Xi Jinping offered huge investment there during his visit to Bangladesh. The Chinese government announced an investment of $ 24 billion in Bangladesh, and China's private sector also talked about $ 13 billion investment there. It is to be noted that military cooperation between China and Bangladesh was not included in the deals which were announced during Jinping's visit. The maritime security environment of the Bay of Bengal may be affected by Bangladesh's purchase of two submarines from China.

India and China:

After giving epidemic like corona virus, now China has a new trick. The condition of companies in South Asian countries is bad due to Kovid-19. This is in favor of seeding Beijing. China has begun

GHATNANDUR College

its strategic move to South Asia under the guise of Corona. India has started suffering due to the actions of China. In fact, China is now preparing to do leniency by lending to those countries to show leniency on companies that have become vulnerable due to the epidemic. The main reason for this is that China is spreading its debt trap in India's neighboring countries. China has decided to 'financially' help these countries in order to improve the economy that has been damaged due to the epidemic. Some countries have a lockdown and the economy is braked. Kovid-19 test kits, PPE, masks and other security equipment have already been sent from China to Sri Lanka, Nepal, Bangladesh, Afghanistan and Maldives. He is already helping his old partner Pakistan. Aggressive policies have already been adopted by China's move from India.

India and Pakistan:

Pakistan continues to be hostile to India. There has been a substantial reduction in cross-border violence in Jammu and Kashmir since 2003. However, Pakistan continues to provide shelter, sponsorship and in some cases direct instructions to armed terrorist groups willing to attack India's land and target Indian interests abroad. The largest and most dangerous of these groups is the Lashkar-e-Taiba, while other groups include al-Qaeda-affiliated-Jaish-e-Mohammed and Taliban-affiliated Haqqani network, which have been inactive for some time in January 2016 He started raising his head again. Pakistan has deliberately controlled these factions, especially due to Western pressure, but they are firmly planted. In addition, Al Qaeda (AQIS), which operates from Pakistan in the Indian subcontinent, could pose a threat to India and other South Asian countries by taking help from these groups.

Conclusion

Broadly, India also faces an environment in which it is presumed that "globally similar" air, sea, sky and other areas such as cyberspace are under pressure, which weakens the liberal international order. India depends on this system for stability and trade. Disappointment, among other things, China's militarization of reclaimed islands on important sea lanes of the South China Sea, the development of anti-satellite weapons and the problem

GHATNANDUR

of space debris, competition in the resource-rich Arctic Sea in view of the opening of the Northwest Passage. And intensifying cyber-espionage by India's participants and opponents. With the addition of the world's network, these regions have become part of India's strategic environment — and therefore have to be considered as traditional geographic areas for defense policy. Due to the following reasons India needs to be cautious encroachments from China in South Asia, Increasing closeness between Russia and Pakistan, Nepal's stand in border disputes and changing geopolitical equations in the Indian Ocean.

References

1) India's National Security: Annual Review 22 - by Satish Kumar (12-13)
2) https://www.amarujala.com/columns/opinion/china-sits-in-the-neighborhood
3) https://www.orfonline.org/article
4) How India Manages Its National Security Hardcover – 10 August 2018 by Arvind Gupta (102-104)
5) https://www.jstor.org/stable/45064565?seq=1 (by J N Dixit)
6) Terrorism in India: A Strategy of Deterrence for India's National Security by Subramanian Swamy (16-18)
7) India's National Security: A Reader (Critical Issues in Indian Politics) by Kanti P. Bajpai and Harsh V. Pant (119-120) (171-172)

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist.Beed 431519

SARASWATI
The Research Journal

Special Issue
Global and Internal Politics: Issues and Areas

SBES College of Arts and Commerce,
Aurangabad, Maharashtra

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist.Beed 431519

Special Issue (1) 2020-21, ISSN 2229 - 5224

Saraswati
The Research Journal

Special Issue
Internal and Global Politics : Issues and Areas

Editorial Board
Prof. M.A. Paithankar
In-charge Principal
Prof. M.M. Gaikwad
Vice-Principal
Dr. P.P. Deo
Vice-Principal

Executive Editor of this issue
Prof. N.B. Aghav
Head, Department of Political Science

Please Note

- The views expressed in this publication are purely personal judgments of the contributors and do not reflect the views of SBES College of Arts and Commerce, Aurangabad, Maharashtra or the editorial board of the research journal.
- No part of this publication may be reproduced or copied in any form by any means without prior written permission.
-

ISSN 2229 – 5224

© All rights reserved

Email feedback to sbescollegeac@yahoo.com

Published and Typesetting
SBES College of Arts and Commerce, Aurangabad, Maharashtra Printed

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist.Beed 431519

GHATNANDUR
Vasantdada Arts & Science College

Internal and Global Politics : Issues and Areas

Special Issue Editor
Dr. Navnath Aghav
Professor and Head
Department of Political Science

SBES College of Arts and Commerce,
Aurangabad, Maharashtra

अनुक्रमणिका

अ.क.	पेपरचे नाव	लेखकाचे नाव	पृष्ठ
1.	संपादकीय		viii
2.	ग्रामीण विकासात स्थानिक स्वशासनाची भूनिका	भाग्यश्री दौड	01
3.	केंद्र-राज्य संबंध	डॉ.कादरी सय्यद मुजतबा	06
4.	निवडणुक आयोगाची भूमिका	उज़मा ऐनोद्दीन सिद्दीकी	08
5.	केंद्र आणि राज्यसंबंध	कैलास अवसरमोल	12
6.	केंद्र- राज्य संबंध व तणाव निर्माण करणारे घटक	डॉ.सुनिल पिंपळे	17
7.	कलम ३७० व ३५ (A) आणि भारतीय राजकारण	प्रा.मुंडे एस.एम.	21
8.	भारतीय राज्यघटनेतील न्यायालयीन सक्रियतेचे योगदान	डॉ.अण्णासाहेब हरदारे	24
9.	केंद्र-राज्य संबंधाचे बदलते स्वरूप	डॉ.अतुल खोसे	30
10.	कलम ३७० व ३५ अ निर्मुलन	डॉ.रामकिशन लोमटे	34
11.	भारतीय लोकशाही शासन व्यवस्थेत राज्यपालाची भूमिका	दळवे बालाजी	38
12.	कोरोना काळात महिलांवरील अत्याचार: उपाययोजना	डॉ.विश्वनाथ आवड	41
13.	केंद्र-राज्य संबंधातील वाढता तणाव	डॉ.रमाकांत तिडके	46
14.	Abolition of 370 & 35A	आबासाहेब हर्षे	51
15.	लोकशाही शासन : आघाडी शासनाची अपरिहार्यता	डॉ.राजू वनारसे डॉ.सत्यपाल कांबळे	59
16.	केंद्र-राज्य संबंध:एक समीक्षात्मक अभ्यास	डॉ.विनोद आचार्य	64
17.	एक भारत श्रेष्ठ भारत	डॉ.माधव चोले	68
18.	राज्यपालांची भूमिका	परवीन यादव	74
19.	महाराष्ट्रातील बदलते राजकारण	बाळासाहेब नलावडे	80
20.	कोविड-१९ : मिडिया आणि राजकारण	प्रा.हिवाळे लक्ष्मण	83
21.	राज्यपालाची भूमिका	प्रा.भिमराव खरात	87
22.	कलम 370 आणि 35 अ	डॉ.एन.बी.आघाव	90
23.	केंद्र-राज्य संबंधाचे बदलते आयाम	डॉ.माधव कदम	93
24.	राज्यपाल : घटनात्मक अपेक्षा आणि वास्तव	डॉ.माधव कदम	97

GHATNANDUR

25.	भारतीय लोकशाहीच्या बळकटीकरणात निवडणुक आयोगाची भूमीका	डॉ.रामदास निहाळ	100
26.	केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील प्रशासकीय आणि आर्थिक सबंध	प्रा.जोगदंड बळीराम	105
27.	भारतातील प्रादेशिक पक्ष व समकालीन राजकारण	डॉ.ए.पी.वनारसे	109
28.	कलम ३५६ आणि राज्यपालाची वादग्रस्त भूमिका	डॉ.राजेंद्र शिंदे	118
29.	Regional Political Parties and Contemporary Politics	डॉ.नितीन आहेर	124
30.	नागरिकत्व सुधारणा कायदा 2019	डॉ.चौधरी के.पी. डॉ.तांदळे डी.आर.	132
31.	भारतातील केंद्र - राज्य संबंधाचे स्वरुप व तरतुदी	डॉ.नामानंद साठे	139
32.	भारतीय राजकारणातील केंद्र-राज्य संबंध एक अभ्यास	डॉ.महादेव मुंडे	144
33.	कोरोना, सरकार आणि न्यायालयाची सक्रियता	डॉ.प्रभाकर जाधव	151
34.	नागरिकत्व सुधारणा कायद्याचे राजकीयीकरण	प्रा.एकनाथ खरात	156
35.	Covid-19 चे सामाजिक,आर्थिक व राजकीय जीवनावरील परिणाम	डॉ.अंबादास बिराजदार	163
36.	प्रमुख आणि प्रादेशिक शक्तींशी भारताचा संबंध	डॉ.महेश मोटे	167
37.	केंद्र-राज्य संबंध	डॉ.व्यंकटेश खरात	173
38.	भारतीय नागरीकत्व कायदा	छाया सवडतकर	176
39.	नागरिकत्व दुरुस्ती कायदा	डॉ.जगदीश देशमुख	180
40.	1989 नंतर राज्यपालपद आणि कलम 356 च्या वापराचा केंद्र-राज्य संबंधावरील प्रभाव	डॉ.ढोबळे डी.बी.	185
41.	घटकराज्य कारभारात राज्यपालांची भूमीका	डॉ.गालफाडे ए.बी.	194
42.	न्यायालयीन सक्रियता	डॉ.शिवाजी दिवाण	199
43.	भारतीय राजकारणाचे बदलते स्वरूप आणि निवडणूक आयोग	विलास टाले	205
44.	कोरोनी काळातील वाढती न्यायालयीन सक्रियता	डॉ.सुपेकर वैशाली	211
45.	भारतीय मतदारांच्या वर्तनावरील प्रभाव	डॉ.निलेश शेरे	214
46.	राज्यपालाची भूमिका	संदीप चौधरी	219
47.	न्यायालयीन सक्रियता	प्रा.साईचरण पेंडकर	226
48.	न्यायालयीन सक्रियतेचा विश्लेषणात्मक अभ्यास	डॉ.मलदोडे रामराव	229
49.	Covid 19 and Global political Economy	R. V. Mhaske	234
50.	निवडणुक आयोगाची भूमिका	उज़मा ऐनोद्दीन सिद्दीकी	237
51.	केंद्र आणि राज्य संबंध	ज्योती दराडे	241

BHATKHEDE (stamp)

केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील प्रशासकीय आणि आर्थिक सबंध

प्रा.जोगदंड मकरंद बळीराम

प्रस्तावना :

केंद्र व घटक राज्य यांच्या अंतर्गत सुरळीत प्रशासन प्रस्थापित होण्याकरिता त्यांच्यातील सबंध हे सहकार्याचे व समन्वयाचे असावे लागतात. केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील प्रशासकीय संबंधाविषयी राज्यघटनेत तरतूद करण्यात आली आहे. या तरतुदीमध्ये देशातंर्गत विकास आणि सुव्यवस्था निर्माण करण्याकरिता केंद्राला घटक राज्यावर नियंत्रण ठेवण्याचे प्रशासकीय अधिकार दिलेले आहेत. तसेच केंद्राच्या प्रशासकीय अधिकाराचे पालन करणे घटक राज्यांना बंधनकारक केले आहे. त्यामुळे केंद्र सरकार देशात विकास आणि शांतता प्रस्थापित व्हावी या करिता घटक राज्यांना कायद्याची अंमलबजावणी कशी करावी या सबंधी मार्गदर्शन करते. केंद्राने तयार केलेल्या कायद्याच्या विरोधात घटक राज्यांनी कायदे करु नयेत. अशा स्वरुपाच्या प्रशासकीय तरतुदीमुळे केंद्र व घटक राज्याचे सबंध स्थिर स्वरुपाचे प्रस्थापीत होतात.

केंद्र व घटक राज्य यांना विकास प्रक्रिया राबविण्याकरिता आणि वैज्ञानिक व प्रशासकीय कार्याला स्थिरता लाभावी यासाठी विपूल प्रमाणात आर्थिक घटकाची आवश्यकता असते. म्हणूनच केंद्र व घटक राज्य सरकार आर्थिक दृष्ट्या स्वतंत्र असावेत या उद्देशाने भारतीय संविधानात सरकारच्या उत्पन्न व खर्च या बाबी वेगवेगळया ठेवलेल्या आहेत. या मध्ये काही कर पूर्णपणे केंद्र सरकारच्या आधीन ठेवण्यात आले आहेत. तर काही कर घटक राज्यांच्या अधीन ठेवण्यात आले आहेत. परंतू केंद्र सरकारने घटक राज्यांना लष्करी सरंक्षण, दळणवळणाच्या सुविधांची उभारणी, अपत्कालीन परिस्थिती इत्यादी प्रसंगी आर्थिक मदत देण्याची तरतूद करण्यात आली आहे. देशाच्या व नागरिकांच्या विकासात्मक दृष्टीकोनातून केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील प्रशासकीय व आर्थिक सबंध सलोख्याचे असणे महत्वाचे ठरतात. केंद्र व घटकराज्य यांच्यातील सबंधाच्या स्वरुपाच्ा आढावा घेण्याकरिता पुढील प्रमाणे उद्दिष्टांची मांडणी करण्यात आली आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे :

1) राज्य घटनेतील केंद्र व घटक राज्य यांच्या सबंधाच्या तरतूदी समजून घेणे.
2) केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील अधिकारांचे स्वरुप अभ्यासणे.
3) केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील सहकार्याच्या भूमिकांचा आढावा घेणे.

सदरील उद्दिष्टांच्या पूर्ततेकरिता खालीलप्रमाणे गृहीतकृत्याची मांडणी करण्यात आली आहे.

गृहीतकृत्य :

1) केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील संबंध घटनेत तरतूद केलेल्या नियमावलीवर आधारित आहेत.
2)केंद्राचे प्रशासकीय अधिकार घटक राज्यांना पालन करणे जनहिताचे आहे.
3)केंद्राच्या आर्थिक मदतीतून घटक राज्यांच्या विकासाची उभारणी होत आहे.

वरील गृहीतकृत्यांच्या अध्ययनाकरिता पुढीलप्रमाणे संशोधन पध्दतीचा आवलंब करण्यात आला आहे.

संशोधन पध्दती :

सदरील शोधनिबंधाच्या मोजणीकरिता प्रामुख्याने द्वितीयक स्त्रोतांचा अवलंब करण्यात आला आहे. यामध्ये प्रकाशित स्त्रोतामधील संदर्भ ग्रंथ, क्रमिक पुस्तके, मासिके, साप्ताहिके, वर्तमानपत्रातील लेख, विविध

शासकीय व निमशासकीय संस्थांनी प्रकाशित केलेले अहवाल इत्यादीचा अवलंब करण्यात आला आहे. तर अप्रकाशित स्त्रोतामध्ये एम.फील., पी.एचडी प्रबंध, इंटरनेट यांचा वापर करण्यात आला आहे.

प्रस्तुत शोधनिबंधाच्या मांडणी करिता पुढीलप्रमाणे आराखडयाची मांडणी करण्यात आली आहे.

संशोधन आराखडा :

सदरील शोधनिबंधाच्या मांडणी करिता प्रामुख्याने वर्णनात्मक आराखडयाचा अवलंब करण्यात आला वर्णानात्मक आराखडयातून संकलित करण्यात आलेल्या तथ्यांना शब्दांच्या माध्यमातून एका सुत्रबध्द पध्दतीने मांडणी करण्यात आली.

अ) विषय प्रतिपादन :

केंद्र व घटक राज्य यांच्यामधील सबंध हे स्थिर स्वरुपाचे असावे लागतात. त्याचबरोबर त्यांच्या सबंधामध्ये सहकार्याची जवळीकता निर्माण झालेली असावी. या सहकार्याच्या माध्यमातून केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील प्रशासकीय व आर्थिक संबंध सुरळीत निर्माण होतात. या संबधाची कारणे आणि कायदे पुढीलप्रमाणे दिसून येतात.

प्रशासकीय सबंधाचे स्वरुप व त्यासंबंधीची कायदे :

1) घटक राज्याच्या सरकारला मार्गदर्शन करणे :

केंद्र संसदेने निर्माण केलेल्या कायद्याच्या अमंलबजावणीत अडचण येऊ नये म्हणून केंद्र घटक राज्यांनी आपली कार्यकारी शक्ती कशी वापरावी यासबंधी मार्गदर्शन करु शकते. याकरिता संविधानातील 256 कलमानुसार केंद्रीय सत्तेच्या अनुकूल ठरावी अशी व्यवस्था आणि कार्यकारी सत्ता राज्याकडून राबविली जाईल अशी तरतूद करण्यात आली आहे.

2) घटकराज्याचे शासन केंद्रीय शासनाशी सहाय्यभूत असावे :

संविधानात कलम 257 मध्ये स्पष्ट केले आहे की, घटकराज्याने आपली कार्यकारी सत्ता केंद्रीय कार्यकारी सत्तेला पोषक व सुसंगत असेल अशी वापरली जावी म्हणजे केंद्र सरकारच्या कायद्याच्या विरोधात घटक राज्याने कायदे करु नयेत.

3) केंद्राद्वारे घटक राज्यांना आदेश देण्याचा अधिकार :

केंद्र घटक राज्याच्या शासनाला राष्ट्रीय आणि लष्करीदृष्टया आणि दळणवळणाची उभारणी व सुविधा करणे, तसेच केंद्रीय मालमत्तेचे संरक्षण करणे इत्यादी आदेशाचे पालन करणे घटक राज्यासाठी बंधनकारक आहेत.

4) घटकराज्यांच्या संघर्षासबंधी निर्णय :

दोन किंवा अधिक राज्यांतून वाहणाऱ्या नदीच्या पाण्याचा वापर, वाटणी व नियंत्रण याबाबत राज्या-राज्यात वाद निर्माण झाल्यास त्याची सोडवणूक करण्यासबंधीचा कायदा संसदेला करता येतो. संसदेचा निर्णय अंतिम स्वरुपाचा असतो. ही तरतुद घटनेच्या कलम 262 नुसार करण्यात आली आहे.

5) राज्या-राज्यात समन्वय व सहकार्य प्रस्थापित करणे :

केंद्र सरकार जनहित लक्षात घेऊन घटनेतील कलम 263 नुसार राज्या-राज्यातील संघर्ष लवदामार्फत मिटवून राज्यावर काही निर्बंध लादून राज्या-राज्यात समन्वय व सहकार्य प्रस्थापित करु शकते

6) केंद्राची कामे घटक राज्याकडे सोपवणे :

संविधान कलम 258 नुसार केंद्र सरकार आपले काही कार्य घटक राज्यांकडे सोपवू शकते. केंद्राने सोपवलेली कार्य घटक राज्यांना पार पाडणे बंधनकारक करण्यात आली आहेत.

7) अखिल भारतीय नोकर भरती :

केंद्र सरकार घटक राज्यांचा प्रशासकीय कारभार सुरळीत पार पाडण्याकरिता लोकसेवा आयोगा मार्फत नोकर भरती करुन त्यांची घटक राज्यात प्रशासकीय अधिकारी म्हणून नियुक्ती करते. या कर्मचाऱ्यांना केंद्र सरकारचे अधिकार असतात. त्यांच्या विरुध्द घटक राज्य कार्यवाही करु शकत नाही.

8) घटक राज्याकरिता प्रशासकीय प्रमुखांची नेमणूक :

केंद्र सरकार घटकराज्याचा प्रशासकीय प्रमुख म्हणून राष्ट्रपतीद्वारे राज्यपालाची नियुक्ती करते. राज्यपाल त्या घटकराज्यातील सर्व प्रशासनावर नियंत्रण ठेवीत असल्यामुळे घटक राज्यात शांतता प्रस्थापित होवून प्रशासकीय कार्यभार सुरळीत चालतो.

9) घटक राज्यातील आणीबाणीचे नियोजन :

घटक राज्य संविनिधानानुसार शासन चालवित नसेल तर राज्यपालाच्या अहवालानुसार राष्ट्रपती कलम 356 नुसार घटक राज्यात आणीबाणी लागू करु शकतात. घटक राज्यातील कायदेमंडळ बरखास्त करुन सर्व कार्यकारी सत्ता राष्ट्रपतीचा प्रतिनिधी म्हणून राज्यपालाकडे येते.

ब) आर्थिक संबंध :

केंद्र व घटक राज्य यांच्यात आर्थिक संबंध हे परिस्थितीनुसार निश्चित करण्यात आले आहेत. यामध्ये केंद्र व घटक राज्य यांना आपापली आर्थिक उत्पादनाची साधने विभागून दिलेली आहेत. तसेच संविधानाने कांही कर पूर्णपणे केंद्राच्या स्वाधीन केले आहेत. तर काही पूर्णपणे घटक राज्याच्या स्वाधीन करण्यात आले आहेत. परंतू काही कर केंद्र सरकार लावते व त्याची वसूली मात्र राज्य शासनाला करावी लागते. काही कर केंद्र सरकार वसूल करते त्यातील काही हिस्सा घटक राज्याला दिला जातो. केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील आर्थिक संबंधाचे स्वरुप पुढील प्रमाणे मांडता येते.

1) केंद्राच्या आर्थिक उत्पन्नाचे घटक :

केंद्र सरकारला राष्ट्रीय, आंतरराष्ट्रीय आयात-निर्यात कंपनी कर, मादक द्रव्यावरील कर, अकबारी कर, रेल्वे भाडे, विमान वाहतूक, टपाल वाहतूक, दूरसंचार इत्यादी कर प्राप्त हातो.

2) घटक राज्याच्या आर्थिक उत्पन्नाचे घटक :

घटक राज्यांना स्थानिक पातळीवरील शेतसारा, घरभाडे, खरेदी विक्री कर, खाणीवरील कर, औषध विक्री व उत्पादनावरील कर, व्यापार व मनोरंजनावरील कर, सीमा शुल्क इत्यादी घटकातून आर्थिक उत्पादन प्राप्त होते.

3) केंद्र सरकारद्वारे कर निश्चिती, परंतू घटक राज्याकडून वसुली :

संविधानातील कलम 268 नुसार कांही कर केंद्र सरकारला लावता येतात. पण या कराची वसुली घटक राज्य करते उदा. औषधे व सौंदर्य प्रसाधने यावरील कर, मुद्रांक शुल्क या कराची वसुली करण्याचे काम घटक राज्याला करावे लागते व जमा झालेला कर केंद्र सरकारला पाठवावा लागतो.

4) केंद्राच्या उत्पादनावरील कांही भाग घटकराज्यांना देणे :

संविधानातील कलम 270, 271, 272 नुसार ज्या उत्पादनाच्या बाबी केंद्राकडे देण्यात आल्या आहेत त्यातून मिळणाऱ्या उत्पादनाचा काही भाग घटकराज्यांना देता येतो. ही वाटणी वित्त आयोगाच्या शिफारशीनुसार संसद करते.

5) घटक राज्यांना आर्थिक अनुदान देणे :

राज्यघटनेतील कलम 275 नुसार घटक राज्यांना केंद्राच्या आर्थिक मदतीची आवश्यकता असल्यास संसद आर्थिक अनुदान घटक राज्याला देवू शकते. अनुसुचित जातीच्या विकासासाठी घटक राज्य केंद्राच्या पूर्वपरवानगीने कांही योजना राबवत असेल तर त्या योजनावर होणारा खर्च केंद्र सरकारच्या संचित निधीतून दिला जातो.

6) आर्थिक आणीबाणी :

राज्यघटनेच्या कलम 360 नुसार जर देशातील आर्थिक स्थिती धोक्यात आली असेल तर राष्ट्रपती आर्थिक आणीबाणी घोषित करतात. आणीबाणी घोषित झाल्यानंतर घटक राज्याच्या आर्थिक अधिकारावर केंद्राचे वर्चस्व निर्माण होते. केंद्रासह घटक राज्यात नोकरदारांचे वेतन कपात केले जावू शकते.

संशोधनाचे महत्त्व :

प्रस्तुत विषयाच्या संशोधनामुळे केंद्र आणि घटक राज्य यांच्यामधील प्रशासकीय आणि आर्थिक सबंध कोणत्या स्वरुपात आहेत. या सबंधामध्ये केंद्र घटक राज्यावर कोणत्या स्वरुपाचे बंधन घालू शकते याची जाणीव होऊन त्याचे महत्त्व स्पष्ट होते. त्याच बरोबर केंद्राचे आदेश घटक राज्यांना का पाळावे लागतात याची ही जागृती घडून येते. थोडक्यात केंद्र व घटक राज्य यांच्यात प्रशासकीय व आर्थिक सबंध कशाप्रकारचे संबध प्रस्थापित झालेले आहेत हे सदरील अध्ययन विषयातून लक्षात येते.

सारांश :केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील संबंध हे घटनेत नमुद केलेल्या कलमानुसार निश्चित करण्यात आले आहेत. त्याच्याच आधारे केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील सबंधाची कार्यवाही सातत्याने चालू असलेली दिसून येते.

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1) काचोळे दा.धो, समाजशास्त्रीय संशोधन पध्दती, कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद, 2005.

2) घाटोळे रा.ना., संशोधन पध्दती आणि तत्वे, मंगेश पब्लिकेशन्स, नागपूर, 2003

3) गंदेवार एस.एन., सामाजिक संशोधन पध्दती, अरुणा प्रकाशन, लातूर, 2006.

4) जोशी सुधाकर, भारतीय शासन आणि राजकारण, विद्याबुक्स पब्लिशर्स, औरंगाबाद, 2003.

5) कुलकर्णी सुधाकर, शासन आणि राजकारण, अभिजित पब्लिकेशन, लातूर, 2003.

6) डॉ.कुलकर्णी विजयकुमार गो., भारतीय संविधान : शासन आणि राजकारण, कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद, 2004.

7) सोलापूरे राजशेखरे/म्हेत्रे डी.एच., भारतीय शासन आणि राजकारण, अरुणा प्रकाशन, लातूर, 2009.

Arts & Science College, GHATNANDUR

PRINCIPAL

Kisan Shikshan Prasarak Mandal,
Borgoan (Kale) Tq. & Dist. Latur's

NAAC Accredited 'B' Grade

Vasantrao Kale Mahavidyalaya,

Dhoki. Tq & Dist - Osmanabad.

&

Akhil Maharashtra Itihas Parishad, Pune

Jointly Organize

One Day International Conference on

"The History of Pandemic like Covid-19 & Its Impat on Socio-Economic & Political Sectors in the World"

Tuesday, 20th October 2020

ISSN No. : 2278-9308
Impact Factor : 7.675

Editor	Chief Editor	Executive Editor
Dr. N. P. Manale	Dr. Satish Kadam	Dr. Haridas Fere
(Convenor)	(President, AMIP)	(Principal)

Organized by

Department of History
Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgoan (Kale) Tq. & Dist. Latur's
VASANTRAO KALE MAHAVIDYALAYA, DHOKI
Tq & Dist.- Osmanabad - 413508

Vasundhara Arts & Science College, GHATNANDUR

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist.Beed 431519

Hon. Vikram Vasantrao Kale

(MLC, Maharatashta)

Secretary, Kisan Shikshan Prasarak Mandal,

Borgaon (Kale) Tq. & Dist. Latur.

VASANTRAO KALE MAHAVIDYALAYA ORGANIZING COMMITTEE

Dr. Haridas Fere (Principal)
Mr. D. D. Gaikwad (Asst. Prof.)
Mr. J. A. Lokhande (Asso. Prof.)
Dr. Mrs. Jyoti Nade (Asst. Prof.)
Dr. B. V. Mynd (Asst. Prof.)
Dr. P. P. Ingale (Phy. Dire.)
Dr. J. S. Deshmukh (Asst. Prof.)
Dr. N. P. Manale (Convener)
Mr. B. N. Deshmukh (Asst. Prof.)
Dr. R. V. Kamble (Asst. Prof.)
Mr. M. D. Shrimangale (Asst. Prof.)
Dr. R. P. Jadhav (Asst. Prof.)
Mr. D. N. Sarde (Librarian)
Mr. S. V. Jogdand (Asst. Prof.)

All Teaching & Non-Teaching Staff of College

© The Principal, K.S.P.M.'S Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki.

All rights reserved. No part of this publication can be reproduced, stored or transmitted in any form or by any Means, Electronic as Mechanical, including Photocopy, Micro-filming and recording or by any information Storage and retrieval System without the Proper Permission in writing of copyright owners. The opinions expressed in the articles by the Authors and contributors are their own and the Chief Editor assumes no responsibility for the same.

ISSN : 2278-9308

Special Issue No.- 252 (CCXLII)
Published by :
B.Aadhar, Multi Disciplinary Research Journal
Peer Review and Indexed Journal — Impact Factor : **7.675**
Web Site : ***www.aadharsocial.com*** — Co-Executive Editor: **Mr. Virag Gawande**

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) –7.675, Issue NO, 252 (CCXLII)
ISSN : 2278-9308 September, 2020

66	भारतीय समाज और कोरोना विषाणु प्रा. डॉ. कदम एस .एस.	252
67	जागतिक महामारीचा इतिहास आणि मानवी जीवन : एक चिकित्सक अभ्यास डॉ. श्रीमती सरवदे वर्षा तात्यासाहेब	255
68	भारताच्या ग्रामीण आणि शहरी जीवनावर कोविड–१९ चा परिणाम दत्तात्रय विश्वंभर जाधव प्रा. डॉ. महेश मोटे	259
69	स्वातंत्र्यपूर्व काळातील भारतात आलेल्या महामारींचा अभ्यास प्रा. पेटकर योगेश हिरामण	264
70	कोविड–१९ चा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम आणि उपाय योजना प्रा.डॉ. ज्ञानेश्वर जिगे	275
71	महामारी और कोविड –१९ का इतिहास डॉ.गंगणे अमोल/डॉ. दळवे अरुण	281
72	केविड-१९ आणि भारतासमोरील आव्हाने प्रा. डॉ. श्रीकांत गायकवाड	286
73	कोरोनाचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परीणाम- एक अभ्यास प्रा. डॉ. खोंड सुरेश वसंतराव	289
74	उच्च शिक्षा लेते समय अनुसूचित जाति के छात्रों को आनेवाली प्रवेश शुल्क की समस्या – २०२०–२१ डॉ. संदिप गोरख साळवे	293
75	माध्यमिक शाळेतील विद्यार्थांच्या अभ्याससवयी व शैक्षणिक संपादणूक यातील सहसंबंधाचा अभ्यास श्री भगवान रामकृष्ण केंद्रे	296
76	कोविड-१९ चा ग्रामिण जीवनावर झालेला परिणाम प्रा.बोराडे तानाजी रामभाऊ	299
77	कोविड १९ चा जागतिक अर्थव्यवस्थेवर झालेला परिणाम : एक अध्ययन डॉ. रेणुका दशरथराव बडवणे	301
78	कोविड १९ : और विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव डॉ. सय्यद अमर फकिर	304
79	कोविड-१९: आर्थिक समाजिक परिणाम डॉ. पटेल शबिना बेगम मुजाहेद साब	306
80	महामारी, संस्कृती, भाषा आणि साहित्य प्रा.देशमुख बिभीषण	309
81	'कोव्हिड–१९' चा विद्यार्थी, पालक व शिक्षकांच्या दृष्टीकोनावर झालेला परिणाम डॉ. मोरे व्ही.पी.,मुळे रामकिशन ग्यानबा	315
82	कोव्हिड–१९' चे सामाजिक जीवनावरील परिणाम प्रा.अशोक रामचंद्र गोरे	318

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) –7.675, Issue NO, 252 (CCXLII)
ISSN 2278-9308
November 2020

महामारी और कोविड -19 का इतिहास

डॉ. गंगणे अमोल
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर,
तेह्सील अंबाजोगाई, जि. बीड,
महाराष्ट्र राज्य, 431519

डॉ. दळवे अरुण
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर,
तेह्सील अंबाजोगाई, जि. बीड,
महाराष्ट्र राज्य, 431519

सार:

इतिहास के दौरान, रोग के प्रकोपों ने मानवता को तबाह कर दिया है, कभी-कभी इतिहास के पाठ्यक्रम को बदलते हुए, और कभी-कभी पूरी सभ्यताओं के अंत का संकेत देते हैं। यहां सबसे खराब महामारियां और महामारी हैं, जो प्रागैतिहासिक से आधुनिक समय तक संक्रमण करती आ रहीहैं।कोविड -19 संकट वैश्वीकरण से जुड़ी नकारात्मक बाहरीताओं का एक गंभीर अनुस्मारक है। इन्फ्लुएंजा मनुष्य को ज्ञात सबसे विषाणुजनित रोगों में से एक हैं, जो कि छोटी समझ वाली संस्थाओं द्वारा फैलाया जाता है जो जीवन और पदार्थ के बीच धुंधलके में रहते हैं। वे लंबे समय तक निष्क्रिय रह सकते हैं, जल्दी से उत्परिवर्तित हो सकते हैं और व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में और हवा के माध्यम से जल्दी से फैल सकते हैं। मानव इतिहास का चेहरा हमेशा बीमारी से घिरा रहा है, एक से अधिक तरीकों से। प्रौद्योगिकी, जीन अनुक्रमण और माइक्रो आरएनए की हमारी वर्तमान विशेषाधिकार प्राप्त दुनिया में, एक नई बीमारी की संभावना जो हमें अपने घरों के अंदर रखती है, एक असंभव डायस्टोपिया लगती थी। हालांकि यह बीमारी और अचानक लहर में आपदा लाने के लिए आशिया और व्यापक दुनिया भर में अपरिहार्य और आवर्ती है।

कीवर्ड:

महामारी, कोविड -19, नोवल, कोरोना, संक्रमण, संक्रामक रोग,प्लेग, स्मॉल पॉक्स, हैजा, डेंगू, स्वाइन फ्लू.

परिचय:

बीमारी और बीमारियों ने शुरुआती दिनों से मानवता को त्रस्त कर दिया है, हमारे नश्वर दोष। हालांकि, कृषि समुदायों के लिए चिह्नित बदलाव तक यह नहीं था कि इन रोगों के पैमाने और प्रसार में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई।व्यापक व्यापार ने मानव और पशु बातचीत के लिए नए अवसर पैदा किए जो इस तरह की महामारियों को फैलाते हैं। मलेरिया, तपेदिक, कुष्ठ, इन्फ्लूएंजा, स्मॉल पॉक्स, और अन्य सबसे पहले इन शुरुआती वर्षों के दौरान दिखाई दिए।अधिक सभ्य मनुष्य बन गए - बडे शहरों के साथ, अधिक विदेशी व्यापार मार्गों, और लोगों, जानवरों और पारिस्थितिक तंत्रों की विभिन्न आबादी के साथ संपर्क बढ़ गया।जैसे मानव दुनिया भर में फैल गया है, वैसे ही संक्रामक रोग भी हैं। इस आधुनिक युग में भी, प्रकोप लगभग स्थिर हैं, हालांकि हर प्रकोप महामारी स्तर तक नहीं पहुंचता है जैसा कि COVID-19 कहते है।आज का दृश्य इतिहास के सबसे घातक महामारियों में से कुछ को रेखांकित करता है, जो एंटोनिन प्लेग से लेकर वर्तमान COVID-19 इवेंट तक है।

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) –7.675, Issue NO, 252 (CCXLII)
ISSN : 2278-9308
November 2020

महामारी और इतिहास

प्लेग

हालाँकि, प्लेग मुख्य रूप से कृन्तकों की एक बीमारी है। आमतौर पर, मनुष्य एक दूसरे को संक्रमित नहीं कर सकते हैं, केवल दुर्लभ न्यूमोनिक रूप को छोड़कर, या जब चूहे पिस्सू अपने वर्तमान मेजबान की मृत्यु के बाद एक नए मेजवान की तलाश कर रहे हैं। चूहा कॉलोनियों को तटीय जहाजों पर फेंक दिया गया था, और संक्रमित चूहों को बंदरगाह से बंदरगाह तक पहुंचाया गया था। एक बार अंतर्देशीय स्थापित होने के बाद, बुबोनिक प्लेग एक रेंगने वाला महामारी बन गया, जो कि केवल तेजी से फैल रहा था जैसा कि अंतर्निहित चूहे की आवादी ने किया था। आधुनिक तकनीक ने प्लेग की महामारियों को बदल दिया। 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में, महामारी जहाज द्वारा उतरने के बाद भारतीय अभ्यारण्य में तेजी से फैल गई, तेजी से संक्रमित चूहों के पूरक के साथ रेलवे द्वारा अनाज आंदोलनों के माध्यम से देश को ऊपर ले जाया गया। हालांकि, यह रेलवे लिंक से दूर मध्ययुगीन रेंगने वाले एपिजुटिक पर वापस लौट आया।

हालांकि, 1994 में सूरत में प्लेग का प्रकोप हुआ था। यह 1993 में महाराष्ट्र के लातूर और बीड में भूकंप के कारण पारिस्थितिक गड़बड़ी के कारण हुआ था। भूकंप के कारण लोग घरों से भागे हुए अनाज के पीछे भाग गए। पारिस्थितिक गड़बड़ी के कारण चूहों को भी संक्रमित किया गया और इसे लोगों को दिया गया। लातूर और बीड के लोग तब सूरत में एक धार्मिक सभा में शामिल हुए, जिसके कारण शहर में इसका प्रकोप बढ़ गया।

ब्लैक डेथ यूरोप के उत्तर मध्य युग (1315–1317 के पहले महान अकाल होने के दौरान) को प्रभावित करने वाली दूसरी आपदा थी और अनुमान है कि इससे यूरोप की आबादी का 30% से 60% लोगों की मृत्यु हो गई थी। कुल मिलाकर, प्लेग ने 14 वीं शताब्दी में दुनिया की आबादी अनुमानित 475 मिलियन से घटाकर 350–375 मिलियन कर दी होगी। लेट मिडल एजेस में आगे के प्रकोप थे, और अन्य योगदान करने वाले कारकों के साथ 1500 तक यूरोपीय आबादी 1300 के स्तर को हासिल करने के लिए ले गई। 19 वीं शताब्दी की शुरुआत तक दुनिया भर के विभिन्न स्थानों पर प्लेग के प्रकोप का असर हुवा।

हैजा/ कॉलरा

पहली आधुनिक महामारी हैजा थी, जो औपनिवेशिक लिंक के बाद 19 वीं शताब्दी के प्रारंभ में एशिया से यूरोप में आयात की गई थी। हिंद महासागर व्यापार मार्ग से पहले हैजा यूरोप क्यों नहीं पहुंचा था, यह एक रहस्य बना हुआ है। क्या इसका कारण यह था कि हैजा रोगज़नक़ लंबे तटीय शिपिंग यात्राओं पर अपने गर्म नम उष्णकटिबंधीय वातावरण के बाहर लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकता था और केवल 18 वीं शताब्दी के अंत में आविष्कार किए गए तेज़ स्टीमरशिप के युग में यूरोप में पहुँचाया गया था?मज़दूर वर्ग को काम करते रहना था जबकि कुछ इलाइट संक्रमित शहरों से भाग गए थे। लेकिन लगभग आधा मिलियन की आबादी के साथ दुनिया के सबसे बड़े शहरों में से एक, महामारी में सड़कें ज्यादातर खाली थीं। कई विद्वानों का मानना है कि शहर की आबादी के आधे से एक चौथाई के बीच महामारी के दौरान मारे गए थे।कई सौ हजार लोग अपने साथ प्लेग ले जाने वाली गाड़ियों से बॉम्बे भाग गए थे। जहाजों ने दुनिया भर में प्लेग को हांगकांग से बाहर किया, लेकिन भारत के भीतर, यह रेलवे था। शायद, यह एक कारण था कि इस समय प्रवासी मजदूरों की घर वापसी में मदद के लिए ट्रेनें नहीं चल रही थीं। यह इस इतिहास के कारण है कि महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक हिंद स्वराज में कहा है: *"रेलवे ने भी बुबोनिक प्लेग फैलाया है। उनके बिना, जनता एक जगह से दूसरी जगह नहीं जा सकती थी। वे प्लेग के कीटाणुओं के वाहक हैं। "*

इसे पहले एशियाई हैजा महामारी या एशियाई हैजा के रूप में भी जाना जाता है। यह माना है कि कलकत्ता शहर में शुरू हुआ था और समय के साथ पूरे दक्षिण पूर्व एशिया में मध्य पूर्व, पूर्वी अफ्रीका और भूमध्यसागरीय तट तक फैल गया था। इस महामारी के दौरान सैकड़ों लोग मारे गए। इस महामारी ने एशिया के लगभग हर देश को प्रभावित किया था।

स्पैनिश फ्लू

भारत में 1918 फ्लू महामारी दुनिया भर में स्पेनिश फ्लू महामारी के एक भाग के रूप में 1918-1920 के बीच भारत में एक असामान्य रूप से घातक इन्फ्लूएंजा महामारी का प्रकोप था। यह भी कहा जाता है कि भारत में बॉम्बे इन्फ्लुएंजा या बॉम्बे फीवर के रूप में जाना जाता है, माना जाता है कि देश में 1417 मिलियन लोग मारे गए हैं, जो सभी देशों में सबसे अधिक हैं। डेविड अर्नोल्ड (2019) का अनुमान है कि कम से कम 12 मिलियन मृत, लगभग 5% आबादी। 1911 और 1921 के बीच का दशक एकमात्र जनगणना काल था जिसमें भारत की जनसंख्या गिर गई थी, जो ज्यादातर स्पैनिश फ्लू महामारी के कारण हुई थी। भारत के ब्रिटिश शासित जिलों में मरने वालों की संख्या 13.88 मिलियन थी। अन्य महामारी जिसमें भारत ने फिर से शेरों के शिकार का हिस्सा बताया, वह 1918 का स्पैनिश फ्लू था। इसने प्रथम विश्व युद्ध से लौटने वाले सैनिकों के एक जहाज के माध्यम से भारत में प्रवेश किया जो मुंबई में डॉक किया गया और वहां से पूरे देश में फैल गया। लगभग 18 मिलियन भारतीय मारे गए और कई और संक्रमित हुए। निराला के नाम से मशहूर हिंदी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी ने अपने संस्मरणों में लिखा है: *"शवों के साथ गंगा बहती थी।"* उसने अपनी पत्नी और अपने परिवार के कई सदस्यों को फ्लू में खो दिया और उन्हें अपना अंतिम संस्कार करने के लिए पर्याप्त लकड़ी नहीं मिली। 1918 में *सेनेटरी कमिश्नर की रिपोर्ट* में कहा गया था कि यह सिर्फ गंगा नहीं बल्कि पूरे भारत की सभी नदियाँ हैं जो निकायों से भरी हुई थीं।साबरमती आश्रम में दूसरों के साथ-साथ महात्मा गांधी भी संक्रमित थे और उन्होंने कहा था कि उन्होंने तब जीने में सारी दिलचस्पी खो दी थी।देश में स्वास्थ्य सेवा प्रणाली चिकित्सा की मांग में अचानक वृद्धि को पूरा करने में असमर्थ थी। मौत और दुख का परिणाम है, और महामारी के कारण आर्थिक गिरावट के कारण औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भावना में वृद्धि हुई।

स्मॉल पॉक्स

स्मॉल पॉक्स एक और महामारी थी जिसने भारत को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया और विशेष रूप से ओडिशा को। हालाँकि यह प्राचीन काल से चरक संहिता में उल्लेखित है, चिकित्सा पर प्राचीन चिकित्सा पद्धती भारत में स्थानिकमारी वाले थे, यह स्मॉल पॉक्स1870 से 1874 में महामारी बन गया था, लेकिन 1974 में भारत में इसका सबसे बुरा प्रभाव पड़ा। उस वर्ष भारत के लिए जिम्मेदार था। 60,000 से अधिक मौतों के साथ दुनिया भर में कुल मृत्यु का 86%। इस बीमारी को मिटाने के लिए डब्लूएचओ के नेतृत्व में बड़े पैमाने पर प्रयास हुए और 1980 में, स्मॉल पॉक्स पृथ्वी के चेहरे से मिट जाने वाली पहली बीमारी बन गई थी।

डेंगू और चिकनगुनिया

(2006) दोनों मच्छर जनित उष्णकटिबंधीय बीमारियां थीं, जिसने पूरे भारत में लोगों को प्रभावित किया। देश के कई हिस्सों पर असर पड़ा और दिल्ली में सबसे ज्यादा मरीज सामने आए।

स्वाइन फ्लू

(2014-2015) स्वाइन फ्लू एक प्रकार का इन्फ्लूएंजा वायरस H1N1 है और 2014 में, गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, महाराष्ट्र और तेलंगाना वायरस के कारण सबसे अधिक प्रभावित राज्यों में से थे। देश भर में लगभग 33,000 मामले सामने आए और लगभग 2000 लोगों ने अपनी जान गंवाई

निप्पा वायरस

(2018) मई 2018 में केरल में फलों के चमगादड़ों के कारण संक्रमण हुआ था जो कुछ ही दिनों में **महामारी बन गया।** निवारक उपायों के कारण, जून के महीने तक केरल के भीतर प्रकोप पर अंकुश लगा **दिया गया था।**

कोविड -19/ कोरोना

कोरोना संकट किसी वैश्विक संकट से कम नहीं है। यह कुछ वर्षों में जीवंत वैश्विक अनुभव और इतिहास का हिस्सा बन जाएगा। वुहान, रिपब्लिक ऑफ चाइना में अपने उपरिकेंद्र के साथ एक नोवल कोरोनोवायरस (nCoV) स्पिलओवर घटना, अंतर्राष्ट्रीय चिंता का एक सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल बन गया है। यह दिसंबर 2019 में एक प्रकोप के रूप में शुरू हुआ, और 28 फरवरी, 2020 तक, वैश्विक स्तर पर कुल 2,859 मौतों के साथ, वैश्विक रूप नोवल कोरोनावायरस बीमारी 2019 (COVID-19) के 83,704 मामले सामने आए हैं, जिसके परिणामस्वरूप कुल 3.41 प्रतिशत की मृत्यु दर हुई। रोग की नैदानिक विशेषताएं स्पर्शोन्मुख मामलों या हल्के लक्षणों से लेकर होती हैं, जिसमें बुखार, खांसी, गले में खराश, सिरदर्द, और नाक से गंभीर मामलों जैसे निमोनिया जैसे गंभीर लक्षण शामिल होते हैं, जो बहु-अंग विफलता के लिए यांत्रिक वेंटिलेशन के साथ श्वसन विफलता, सेप्सिस, और मौत परिनाम स्वरूप भयानक रूप ले लेती है। जैसा कि संचरण दर काफी खतरनाक है, हमें रोगसूचक रोगियों के उपचार और संक्रमण को रोकने और सामुदायिक संचरण को रोकने के लिए निवारक उपायों को अपनाने के लिए एक प्रभावी चिकित्सीय रणनीति की आवश्यकता होती है। कोरोनवायरस/ वायरस 2019 (COVID-19) महामारी अंतरराष्ट्रीय चिंता का एक सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल है, इसलिए पीके / पीडी प्रोफाइल, विषाक्तता प्रोफ़ाइल, और ड्रग इंटरैक्शन के बारे में पहले से ही ज्ञात होने के कारण दवाओं का पुन: उपयोग करना एक आकर्षक और व्यवहार्य विकल्प है। यह शोध निबंधCOVID-19 के विभिन्न पहलुओं पर जोर देता है ।

COVID-19 ने हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन, व्यवसायों को तेजी से प्रभावित किया है, विश्व व्यापार और आंदोलनों को बाधित किया है। प्रारंभिक अवस्था में रोग की पहचान वायरस के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बहुत तेजी से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। अधिकांश देशों ने अपने उत्पादों के निर्माण को धीमा कर दिया है। विभिन्न उद्योग क्षेत्र इस बीमारी के कारण प्रभावित होते हैं; इनमें फार्मास्यूटिकल्स उद्योग, सौर ऊर्जा क्षेत्र, पर्यटन, सूचना और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे उद्योग भी शामिल हैं। यह वायरस नागरिकों के दैनिक जीवन पर और साथ ही वैश्विक अर्थव्यवस्था के बारे में महत्वपूर्ण दस्तक देता है।

इस तरह के प्रकोप के दौरान भारत जैसे विकासशील देश की नैतिकता की तैयारियों और चुनौतियों पर इस वायरल के प्रकोप से निपटने के लिए ड्रग्स, वैक्सीन थेरेपी और कंवलसेंट प्लाज्मा थेरेपी के संयोजन सहित प्रभावी चिकित्सीय रणनीतियों को विकसित करने के लिए आज तक अपनाए गए विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचारकेंद्रित करना आवशक है।विश्व स्तर पर, 17 सितंबर 2020 तक, WHO को रिपोर्ट की गई 937,391 मौतों सहित COVID-19 के 29,737,453 पुष्ट मामले सामने आए हैं।

निष्कर्ष

यह एक ज्ञात तथ्य है कि विपत्तियां और महामारी मानवता के पाठ्यक्रम को हमेशा के लिए बदल देती हैं। जबकि हजारों लोग मर जाते हैं, सभ्यताएं खत्म हो जाती हैं, अर्थव्यवस्था ढह जाती है, ऐसी बीमारियां अक्सर मुश्किल हो जाती हैं, जो दुनिया भर में सत्तारूढ़ सरकारों के लिए एक बड़ी चुनौती है।हमें

अपने सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों में और अधिक स्थिरता का निर्माण करने की आवश्यकता है। वर्तमान COVID-19 महामारी और इसके भयानक वैश्विक प्रभाव उभरते संक्रामक रोगों के संभावित अवरोध की याद दिलाते हैं। सौभाग्य से, आज दुनिया इस उभरते हुए जानवर से लड़ने के लिए बेहतर है। COVID-19, निस्संदेह, एक बार का जीवनकाल महामारी है। मानवता अत्यधिक अनिश्चितता और एक अभूतपूर्व वैश्विक स्वास्थ्य संकट के क्षणों को देख रही है। यद्यपि यह अनुमान लगाना असंभव है कि यह महामारी कहाँ बढ़ रही है, निश्चित रूप से, संक्रामक रोगों के इतिहास में एक नया अध्याय अभी शुरू हुआ है।

संदर्भ सूची:

1) "How the Spanish flu changed the course of Indian history". Gulf News. 15 March 2015. Retrieved 8 April 2020.
2) World Health Organization. Disease outbreaks by year. [cited2020 April 10]. Available from: https://www.who.int/csr/don/archive/year/en/.
3) Wuhan Municipal Health Commission. (2019) Report of clustering pneumonia of unknown aetiology in Wuhan City. [cited2020 April 10]. Available from: http://wjw.wuhan.gov.cn/front/web/showDetail/2019123108989 [in Chinese].
4) https://www.financialexpress.com/opinion/covid-19-spotlight-a-brief-history-of-pandemics/1964490/
5) https://www.bbc.com/future/article/20200325-covid-19-the-history-of-pandemics
6) The Pandemic Century: A History of Global Contagion from the Spanish Flu to Covid-19 Paperback – 1 July 2020 by Mark Honigsbaum (118-122)
7) How to Survive a Plague: The Story of How Activists and Scientists Tamed AIDS by David France (17-20)
8) Corona कोरोना - By Dr D K Garg - AmanPrakashan Hindi Hardcover Book (Hindi) Hardcover - July 2020 by Dr. D. K. Garg (43-46)

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist.Beed 431519